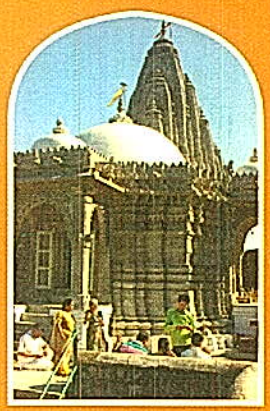

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2542

VOLUME : 6 | ISSUE : 11 | MUMBAI, MAY 2016 | PAGES : 40 | PRICE : ₹25

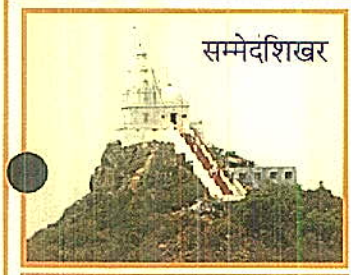

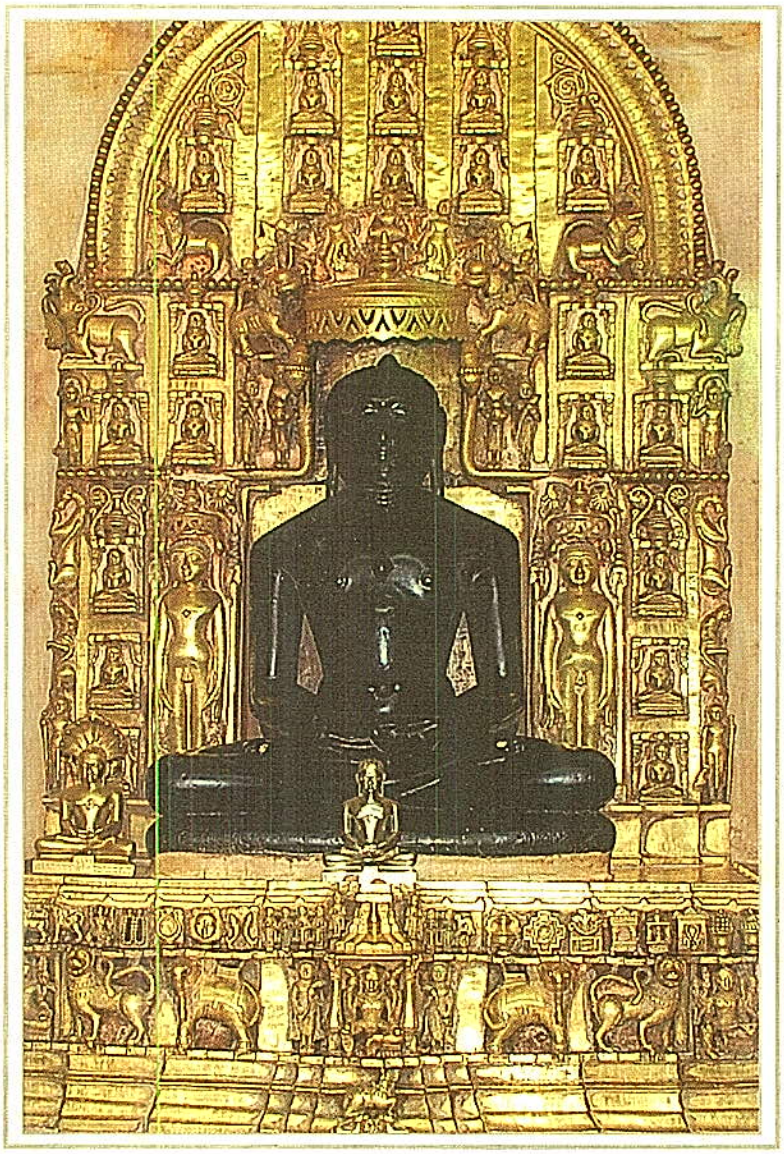

तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान, ईडर

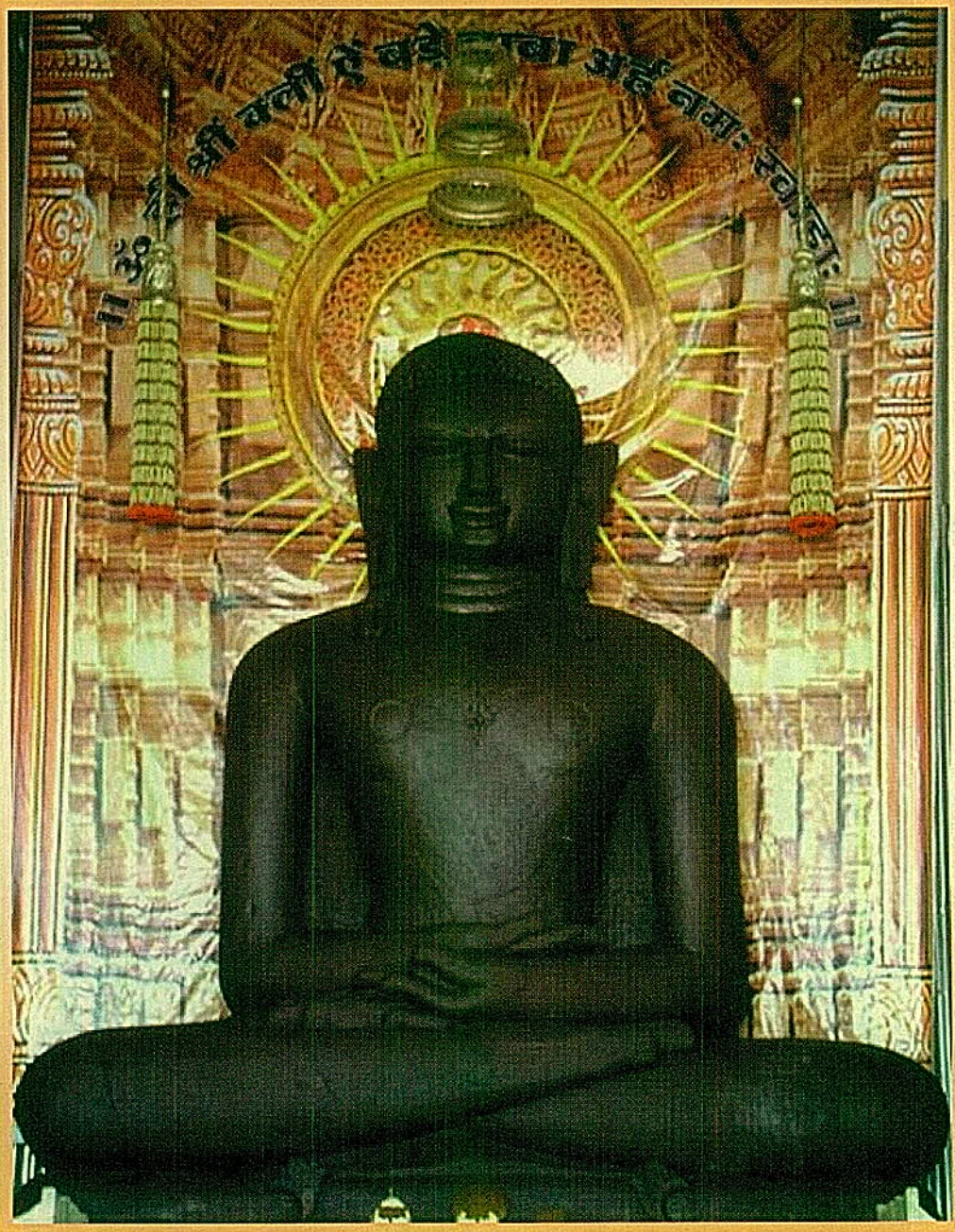

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्षीय संबोधन

विश्व में अद्वितीय, अप्रतिम व अक्षुण्ण भारतीय संस्कृति के गरिमामय दर्शन, संस्कृति के चिर पुरातन मंदिरों और उनमें विराजित प्रतिमाओं, गिरि कन्दराओं में उत्कीर्ण भित्ति चित्रों, स्तंम्भों पर अंकित लेखों आदि में होते हैं। भारतीय संस्कृति में श्रमण संस्कृति का अपना विशिष्ट महत्त्व है।

हमारे ग्रंथों में वर्णित जिनालयों, देवालयों, गिरि कन्दराओं में उत्कीर्ण शिल्प कौशल भारतीय वास्तुकला में अपना अद्वितीय व अनुपम स्थान रखती है।

इस शिल्प के दर्शन हमें हमारे प्राचीन तीर्थों में देखने को मिलते हैं। हमारा सौभाग्य है कि हम उस संस्कृति में जन्में जहाँ हमें हमारे आचार्यों ने तीर्थंकरों द्वारा खिरी वाणी को हमें उपलब्ध कराया है।

सम्पूर्ण विश्व आज भटकाव के दौर में नये-नये आविष्कार भौतिकता की चकाचौंध से तो हमें परिपूर्ण कर रहे हैं, लेकिन प्रतिदिन हो रही ये खोजें हमें संतुष्ट नहीं कर पाती हैं, असंतुष्टि का स्वर हमारे मन-मस्तिष्क में निरंतर गुनगुनाता रहता है, और हम सब कुछ नया-नया ही चाहते हैं और हम ढूंढते हैं वह नया जिससे हमारी कषायों को पंख लगे। चारों ओर अशांति है, ऐसे में व्यक्ति आश्रय स्थल ढूंढता है, ये आश्रय स्थल और कोई नहीं हमारे तीर्थ ही होते हैं जो उसे प्राचीनता का बोध कराते हैं, वहाँ के प्राचीन शिला लेख, प्रतिमाएँ बताती हैं कि आपको वास्तविक शांति

के लिए यहाँ आना ही होगा, अपनी कषायों के शमन के लिए कुछ क्षण तीर्थ में गुजारने ही होंगे।

तीर्थ हमारी संस्कृति के आराध्य स्थल हैं, हमें मौका मिला है कि हम इन्हें अगली पीढ़ी को सुरक्षित सौंपें। इस हेतु वर्तमान पीढ़ी की सक्रियता ही तीर्थों को बचा सकती है। यह पीढ़ी आगामी पीढ़ी को यह सन्देश प्रदान कर सकती है कि तीर्थ से इस संसार से तरा जा सकता है, वहीं संसार में भी शांतिपूर्वक, धर्मध्यान पूर्वक धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का अर्जन किया जा सकता है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी जिसका इन तीर्थों के प्रति समर्पण का इतिहास है, कमेटी के हमारे पूर्वजों ने तीर्थों को बचाने के लिए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, जिस कारण ११४ वर्षों से हमारे तीर्थ सुरक्षित हैं।

लेकिन मुझे चिंता है हमारे आराध्य की जिनकी सौम्य मुद्रा हमें निरंतर प्रेरित करती है

उन्हें सुरक्षित करने की। आज तीर्थ जहाँ हैं वे स्थान निर्जन हैं, समाज वहाँ से दूर है, इसलिए उन प्राचीन जिनालयों की सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। सुरक्षा में समझदारी है, सुरक्षा ही बचाने का श्रेष्ठ विकल्प है। हमें तीर्थों की सुरक्षा के लिए कदम उठाने हैं।

कृत्रिम साधन तो सुरक्षा के बहुत हैं, उन्हें हम एवं क्षेत्र की कमेटियां करती भी हैं लेकिन कृत्रिम साधनों से सुरक्षा कितने दिन हो सकती है। हमें तन-मन-धन से आगे आना होगा, जब हम तन-मन-धन से आगे आएगें तो सर्वप्रथम यह तन हमें तीर्थों की ओर ले जाना होगा। विशेषकर प्राचीन तीर्थों की ओर। यदि प्राचीन तीर्थों पर हम निरंतर आना-जाना करें तो सुरक्षा स्वत: हो जाएगी। जब हमारे जिनालय, तीर्थ जनविहीन होते हैं तो हमारी सुरक्षा प्रभावित होती है।

हमने अभी भगवान महावीर की २६१५ वीं जन्म जयंती मनायी, मई-जून में बच्चों की छुट्टियाँ हैं, ऐसे में बच्चों के साथ घूमने जाएं तो उसमें प्राचीन तीर्थक्षेंत्रों को यात्रा में अवश्य जोड़ें व अपने बच्चों को अभिषेक-पूजा-दान करायें जिससे उनमें संस्कार जगें, साथ ही तीर्थ के प्रति श्रद्धा जागृत हो सके।

हो सकता है तीर्थों पर आधुनिक सुविधाएँ न हों, लेकिन वहाँ सुविधा नहीं श्रद्धा जगायें, सुविधा कैसे हो सकती है इसके सुझाव दें। विकास के लिए अपना योगदान करें। संरक्षण हेतु समर्पण करें। यह सब होगा वहाँ जाने से, जुड़ने से और तीर्थ पर रुकने से। तीर्थ पर जाकर वहाँ की प्रकृति को निहारें। हमारी प्रकृति में सुधार आएगा, मन की प्रकृति में बदलाव होगा हमें शांति, समृद्धि व प्रगति मिलेगी, संस्कारों का फैलाव आगामी पीढ़ी में होगा।

आईये! आप और हम सभी इस तीर्थ वंदना के माध्यम से "तीर्थ की वंदना" का विचार बनायें और तन-मन-धन से तीर्थों के विकास, संरक्षण, संवर्धन में अपना योगदान सुनिश्चित करें।

हाँ, याद रखे तीर्थों की अच्छी बातें फैलाएँ, व्हाट्सएप पर डालें, फेसबुक पर डालें, लेकिन कमियों को, कष्टों को सहन करें, मुनियों का कहना है कि-

"तीर्थयात्रा में कष्ट सहा जाता है, कहा नहीं जाता"

आईये तीर्थों की वंदना करें, हमेशा की तरह यदि कोई महत्त्वपूर्ण बात हो तो आपस में बातचीत के द्वारा तीर्थों के विकास में सहभागी बने।

इसी भावना के साथ

Sarita Jain

सरिता एम. के. जैन, चैन्नई

युवाओं को तीर्थों से जोड़ें

किसी भी सामाजिक संगठन को समाज के बुजुर्गों द्वारा प्रदत्त दिशा तथा युवाओं द्वारा प्रदत्त उर्जा ही उसकी वास्तविक शक्ति होती है। शताब्दियों तक इन दोनों घटकों ने अपने-अपने दायित्व का कुशलता से निर्वाह किया जिसके प्रतीक, स्वरूप हमें विशाल जिन मंदिर, अतिशयकारी जिन मूर्तियां, और समृद्ध ज्ञान के भंडार एवं परम्पराचार्यों द्वारा रचित शास्त्रों की पाण्डुलिपियां प्राप्त होती हैं। ये सभी प्राय: हमारे तीर्थों पर विद्यमान हैं। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में व्यापार, व्यवसाय की परम्परागत रीतियां कमजोर पड़ने लगी। फलत: जीवकोपार्जन हेतु हमारे समाज के युवाओं ने भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर ज्ञान विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। हमारे युवा आज अनेक क्षेत्रों में प्रतिष्ठित-कंपनियों एवं शासकीय निकायों में शीर्ष पदों पर कार्यरत हैं।

इसका एक दुष्परिणाम भी हुआ। समाज के संयुक्त परिवार बिखरने लगे। जीविकोपार्जन हेतु युवाओं को अपना पैतृक निवासस्थान छोड़कर दूसरे शहरों में जाना पड़ा। जहां न उनकी पहचान थी न ही कोई स्थानीय परिचित समाज। फलत: सामाजिक संबंध एवं सामाजिक संस्थाओं में युवाओं की सहभागिता, सक्रियता एवं दायित्व बोध भी घटने लगा। मैनें स्वयं देखा है कि महानगरों की अनेक कॉलोनियों के मंदिरों में दर्शनार्थी युवाओं की संख्या अल्प रह गयी है तथा अष्टान्हिका, दशलक्षण आदि पर्वों में भी अब इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा है। इस विषम परिस्थिति में युवाओं को दायित्व बोध कराने के लिए तथा उनमें बढ़ते काम के दबाव, मानसिक अवसाद तथा एकाकीपन को दूर करने के लिए हमने एक योजना बनायी है। प्रत्येक तीर्थ अपने आसपास के नगरों, महानगरों में कार्यरत दूरस्थ अंचलों से आये युवाओं को आकर्षित करने की व्यवस्था करें तो हम अपनी समाज के युवाओं के तनाव को कम करने, अवसाद को मिटाने एवं एकाकीपन को दूर करने में सहयोग कर सकते हैं। साथ ही उनकी क्षमता, दक्षता एवं उनकी आर्थिक, प्रशासनिक शक्ति का उपयोग तीर्थ के विकास में कर सकते हैं। हमें एतदर्थ तीर्थ पर सीमित मात्रा में सही सुविधाजनक आवास और कम से कम अवकाश के दिनों में सुस्वादु भोजन की व्यवस्था करनी होगी। यदि एक बार अपने क्षेत्र के समीपवर्ती विभिन्न नगरों में व्यापार तथा अन्य कारणों से आये युवा जुड़ जायेंगे तो तीर्थ के विकास में पंख लगने में देर नहीं होगी। सभी तीर्थों को इस संदर्भ में पहल करने, न्यूनतम लागत में सुविधाएं जुटाने का अनुरोध है। आपको इस विषय में मार्गदर्शन प्रदान कर हमें खुशी होगी।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने तीर्थ विकास के संदर्भ में भी युवाओं के विचारों को जानने, समझने और इस संदर्भ में चिंतन की प्रक्रिया को शुरू करने एक अखिल भारतीय निबंध/व्यवाहारिक सुझाव प्रतियोगिता आयोजित करने का निर्णय किया है। जिसकी घोषणा इसी अंक में अलग से की जा रही है। सभी तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारियों, तीर्थ वंदना के सम्पादक मंडल के माननीय सदस्यों एवं तीर्थ भक्तों से एतदर्थ सक्रिय सहयोग की अपेक्षा सहित।

- डॉ. अनुपम जैन

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 6 अंक 11 मई 2016

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री महावीरप्रसाद सेठी	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक - प्रो.अनुपम जैन, इंदौर
संपादक - उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो. डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो. डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001310100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

इस अंक में

अध्यक्षीय संबोधन	3
युवाओं को तीर्थों से जोड़ें	5
जैन तीर्थक्षेत्रों के विकास का स्वरुप कैसा हो?	7
श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र पालीताणा (गुजरात)	9
Report of Karnataka Unit	17
Seven Grand Celebrations at Jinakanchi Digamber jain Mutt-	19
Jaina ascetics leave their holy foot prints on the	20
अखिल भारतीय निबन्ध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता	21
नागदा तीर्थ एवं यहां का जीर्ण-शीर्ण पार्श्वनाथ मंदिर	22
गजपंथा तीर्थ का पौराणिक महत्व (विविध ग्रंथों में)	26
तीर्थ मित्र बनें और जैन तीर्थों की गतिविधियों का अध्ययन करें	29
म. प्र एवं छत्तीसगढ़ महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति का हुआ सम्मेलन	30

श्री 1008 आदिनाथ भगवान,
जलमंदिर,
वारंग क्षेत्र,
कर्नाटक

जैन तीर्थक्षेत्रों के विकास का स्वरुप कैसा हो?

प्रो. डॉ. भागचंद जैन भास्कर, नागपुर

जैन तीर्थक्षेत्र हमारी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और पुरातात्त्विक धरोहर है। उसको सुरक्षित रखना हमारा परम कर्तव्य है। उसे नष्ट करना या जार्णोद्धार के नाम पर मटियामेट करना हमारी सबसे बडी भूल होगी। उसे विकास का अंग नहीं कहा जा सकता। विकास उसे कहा जा सकता है जिसमें प्राचीन धरोहर को समुचित रुप से सुरक्षित रखा जाये और फिर उसके साथ ही आधुनिक सुविधाओं से उसे सुव्यवस्थित किया जाये।

हमारे अधिकांश तीर्थक्षेत्र ग्रामीण अंचलों में अवस्थित हैं। वहां न पर्याप्त अवागमन की व्यवस्था है और न आवास-निवास और भोजन की व्यवस्था है। जो कुछ है भी तो वह साधारण कोटि की है, काम चलाऊ है। अपवाद हमारी सीमा के बाहर है। वर्तमान पीढी पैसे को महत्त्व नहीं देती। वह सुविधावादी है और सभी प्रकार की विशिष्ट सुविधाओं से संपन्न तीर्थक्षेत्र की वन्दनाकर अपना अहोभाग्य मानती है। इस दृष्टि से हमारे अधिकारी दृष्टि से विकास की एक सामान्य रुपरेखा प्रस्तुत कर रहे हैं।

मार्ग व्यवस्था

आज सरकार का विशेष प्रयत्न है कि सभी तीर्थक्षेत्रों को रोड और रेलमार्ग से जोडा जाये। इसके लिए हमारे समक्ष तीन रास्ते हैं- केन्द्रीय व्यवस्था, प्रान्तीय व्यवस्था और स्थानीय निकाय व्यवस्था। केन्द्रीय व्यवस्था में प्रधानमंत्री सडक योजना से हम सभी सुपरिचित हैं। इसका ध्यान रखें कि अपने तीर्थक्षेत्र इस योजना के अन्तर्गत आ जायें। यथावश्यक सम्पर्क साधकर इसमें सफल हुआ जा सकता है। प्रान्तीय और स्थानीय निकायों का उपयोगकर मुख्य रोड से तीर्थक्षेत्र तक आवागमन मार्ग को व्यवस्थित किया जा सकता है। जहां तीर्थक्षेत्र रेल मार्ग से जुडे हुए हैं वहां यात्रियों को लाने की व्यवस्था के लिए तीर्थक्षेत्र अपने वाहन का प्रयोग कर सकते हैं।

आवास व्यवस्था

आवास व्यवस्था या अतिथि गृह हमारे पास जो कमरे तो बनाये जाते हैं पर हम उन्हें व्यवस्थित नहीं कर पाते। हम अपने सामने यदि होटल व्यवस्था को रखें तो हम निश्चित ही यात्रियों को सन्तुष्ट कर सकते हैं। बिस्तर, तकिया, चादर, रजाई सभी कुछ स्वच्छ और पाश्चात्य शैली की सीट हो। इसी के साथ टी.व्ही. पंखा और ए.सी. हो, कमरा भी सुन्दर हो, तीर्थंकरों और तीर्थो, आचार्यों के चित्रों से सजा हुआ हो। यात्री इस सारी व्यवस्था से सन्तुष्ट होगा। उसे उपयुक्त दैनिक किराया देने में कोई कष्ट नहीं होगा।

भोजन व्यवस्था

आज हर यात्री सुन्दरसी भोजन व्यवस्था भी चाहता है। बड़े तीर्थक्षेत्र पर ऐसी व्यवस्था है भी। पर छोटे तीर्थक्षेत्र ऐसी व्यवस्था नहीं कर पाते। वे मांग आने पर व्यवस्था कर देते हैं। वे इस व्यवस्था को सशुल्क या नि:शुल्क कर सकते हैं। हां, जितनी अच्छी व्यवस्था दे सकें, उतना ही अच्छा है। कोई भी यात्री तीर्थक्षेत्र पर बिना कुछ दिये नहीं रहता। हम उसे जितना अधिक सन्तुष्ट कर सकें उतना करने का प्रयत्न करे। इतना अवश्य ध्यान रखें कि छने पानी का उपयोग करें, अभक्ष्य न बने तथा रात्रिभोजन निषिद्ध रहे।

मन्दिर और पुरातत्त्व

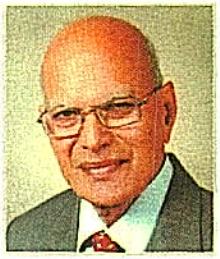

तीर्थक्षेत्र पर प्राय: मन्दिरों और वेदियों की संख्या काफी रहती है। उनमें कुछ नव निर्मित मन्दिर होते हैं और कुछ प्राचीन रहते हैं। सौ वर्ष से प्राचीन मन्दिर पुरातत्त्व की सीमा में आते हैं और नियमानुसार उन्हें आमुल तोडा नहीं जा सकता। हां, अनुमति लेकर जीर्णोद्धार अवश्य किया जा सकता है। हमारे बीच कतिपय समान्य जन ऐसे भी हैं जो पुरातत्त्व और इतिहास के महत्व को समझे बिना उन्हें धूल-धूसरित कर देते हैं और नया मन्दिर खडा कर देते हैं । इससे मन्दिर कब और किसने बनाया था यह समूचा इतिहास नष्ट हो जाता है। उस इतिहास पर नवीन दानदाताओं और आचार्यों के नाम उत्कीर्ण हो जाते हैं। इसे न आध्यात्मिक दृष्टि से सही कहा जा सकता हैं और न नैतिक दृष्टि से। तत्त्व पर ध्यान दिया जाये और पुरातत्त्व को निगल दिया जाये, इस बहाने को कहां तक उचित कहा जा सकता है? हमारी प्राचीन धरोहर चली गई तो फिर बचेगा क्या?

साधारण जनता पुरातत्त्व का महत्त्व नहीं समझतीं। उसे जीर्णोद्धार के नाम पर बरगलाया जाता है और प्रभाव का दुरुपयोग कर प्राचीन मन्दिर को तहस-नहस कर दिया जाता हैं।

दूसरी बात, अधिकारियों को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि प्राचीन मन्दिर के गिराये बिना भी नये मन्दिर का निर्माण किया जा सकता है। इससे पुरातत्त्व भी समाप्त नहीं होगा और नया मन्दिर भी बन जायेगा। इस सन्दर्भ में वास्तुदोष बताकर पुरातत्त्व को नष्ट करना भी उचित नहीं माना जा सकता। यह भी ध्यान में रखा जाना अत्यावश्यक है कि यदि प्राचीन मन्दिर में यक्ष-यक्षिणी समूह का अंकन/उत्कीर्ण हो तो उसे हटाया नहीं जाना चाहिए। यह प्राचीन करना समाज के बीच घनघोर विवाद और संघर्ष को आमन्त्रित करना हैं। जो जहां जैसी पूजा पद्धति प्रचलित हो उसे हठात् दूर करना समाज के बीच विद्वेष पैदा करना है। यदि तीर्थक्षेत्रों का पुरातत्त्व समाप्त कर दिया गया तो वह तीर्थक्षेत्र प्राचीन नहीं कहलायेगा। अत: तीर्थक्षेत्रों का पुरात्त्व किसी भी कीमत पर नष्ट नहीं होने देना चाहिए। साथ ही मन्दिरों की सारी व्यवस्था भी बहुत अच्छी होनी चाहिए।

संग्रहालय

हमारे तीर्थक्षेत्रों और मन्दिरों पर आक्रमण होते रहे हैं। फलत: मूर्तियां खण्डित हो गई और उनके पादपठों पर उत्कीर्ण शिलालेख भी टूट-फूट गये, नष्ट-भ्रष्ट हो गये। ऐसी स्थिति में उन्हें नदियों में फेंक देना यह कहकर/ मानकर कि उनकी अवमानना न हो, बहुत बडी अज्ञानता होगी। ऐसा कर आप अपने ही धर्म की रक्षा करनेवालों के प्रति कृतघ्न बन रहे हैं और उनके योगदान को भुलाकर सारे ऐतिहासिक धरोहर को दफन कर रहे हैं। इसे हम राष्ट्र घातक प्रवृत्ति भी कह सकते हैं। वस्तुत: यह अक्षम्य अपराध है। अधिक अच्छा यह है कि तीर्थक्षेत्रों पर एक संग्रहालय स्थापित कर दिया जाये। इसमें एक बडा भाग

सरकारी अनुदान के रुप में मिल सकता है। इससे हमारी कला और हमारे इतिहास का रुप नष्ट होने से बच जायेगा। प्राचीन मन्दिरों का विनाश वस्तुत: अपने माता-पिता का घात करने जैसा है।

सी.सी.टी.व्ही. केमरे की व्यवस्था

तीर्थक्षेत्रों और वहां पर रहने वाले कर्मचारियों की विशेष सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टि से सी.सी.टी.व्ही. केमरे की व्यवस्था होनी भी अत्यावश्यक है। इसी के साथ ही कर्मचारियों को पर्याप्त वेतन व्यवस्था भी होनी चाहिए ताकि वे तीर्थक्षेत्र की सुरक्षा पर वे विशेष ध्यान दे सकें।

पुस्तकालय और प्रवचन व्यवस्था

प्रत्येक तीर्थक्षेत्र पर एक भव्य पुस्तकालय और वाचनालय का होना अत्यावश्यक है। यात्री के पास तीर्थक्षेत्र पर काफी समय रहता है जिसका उपयोग वह पढने/ लिखने में कर सकता है। संभव है उसे उस पुस्तकालय में कोई ऐसी सामग्री मिल जाये जो उसे कहीं नहीं मिली हो। वह यदि लेखक या चिन्तक होगा तो उस सामग्री का उपयोग वह भलीभांति कर लेगा।

इसी तरह तीर्थक्षेत्र पर त्यागीभवन और प्रवचन भवन की भी व्यवस्था होनी चाहिए। प्रात:काल से ही ऐसा वातावरण प्रस्तुत किया जाये जिससे अध्यात्म की वर्षा होती रहे। यात्रियों को आकृष्ट करने के लिए यह भी एक अच्छा साधन है। यह कार्य पुजारी को भी साँपा जा सकता है।

औषधालय

हर तीर्थक्षेत्र पर एक धर्मार्थ औषधालय हो जो यात्रियों के साथ ही जैनेतर समाज के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सके। जैन समाज को जन सामान्य से जुडा रहना बहुत आवश्यक है। अन्यथा उसे साधारण जनता के बीच विद्रोह की स्थिति का सामना करना पड सकता है। पंचकल्याणकों जैसे महोत्सवों पर पैसे को पानी जैसा बहते देखकर जैनेतर समाज के बीच ईर्ष्या पैदा होना और उससे संघर्ष उपजना स्वाभाविक है।

शिक्षण संस्थान

प्राय: प्रत्येक तीर्थक्षेत्र के पास बडे-बडे भवन रहते हैं जो प्राय: खाली पडे रहते हैं। यदि उनका उपयोग स्कूल या अन्य प्रकार के शिक्षण संस्थान स्थापित करने में हो सके तो यह भी एक बडा सामाजिक योगदान होगा। इससे तीर्थक्षेत्र की आर्थिक समृद्धि भी होगी और जैनधर्म का प्रचार-प्रसार भी होगा। इसी के अन्तर्गत श्रेणीगत प्रवेश भी प्रारम्भ किया जा सकता है। जैन छात्रावास की भी व्यवस्था यहां हो सकती है। प्राकृत और जैनधर्म दर्शन और संस्कृति के अध्ययन/ अध्यापन की भी व्यवस्था इसी तीर्थ क्षेत्र पर की जा सकती है।

त्यागी निवास

प्रत्येक तीर्थक्षेत्र पर एक त्यागी निवास का होना भी अत्यावश्यक है। हमारा साधुवर्ग विचरणशील होता है। उसकी आवास और आहार व्यवस्था के लिए एक त्यागी निवास का निर्माण होता है तो वह निश्चिन्त होकर वहां कुछ दिन रह सकता है। वर्षावास भी कर सकता है। उसे समृद्ध पुस्तकालय भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। साधु सम्प्रदाय समाज की रीढ है, यदि वह स साधक है तो अपनी साधना से सारे समाज को प्रभावित कर सकता है।

तीर्थक्षेत्रों के विकास की यह एक संक्षिप्त रुपरेखा है। जिन मन्दिर उसी का एक यूनिट है, घटक है। उसके परिसर का भी विकास इसी तरह किया जा सकता है। पंचकल्याणकों में हमारा हजारों करोड रुपया पानी जैसा बह रहा है पर उसकी चिन्ता न साधु सम्प्रदाय को है और न श्रेष्ठीवर्ग को। यदि पंचकल्याणक सीधे-साधे ढंग से सम्पन्न करायें जायें तो उसके पैसे का उपयोग तीर्थक्षेत्रों के विकास के लिए हो सकता है और भ्रष्टाचार के कलंक से भी मुक्त हुआ जा सकता है। हमारी तीर्थक्षेत्र कमेटी तीर्थक्षेत्रों के विकास में केन्द्रीय रुप से आनन्दजी कल्याणजी की पीढी के समान योगदान दें, लीड ले तो तीर्थक्षेत्रों का सुन्दरतम विकास हो सकता है और टूरिज्म मैप पर उन्हें लाया जा सकता है।

श्री अतिशय क्षेत्र विजयगोपाल में एक और अतिशय तपस्वी सम्राट आचार्य श्री १०८ सन्मती सागरजी महाराज जी के परमप्रभावी शिष्य बालयोगी ज्योतिपुंज मुनिश्री सुवीरसागरजी महाराज को दृष्टांत हुआ, जिसमें उन्हें वात्सल्यरत्नाकर श्री १०८ विमलसागरजी महाराज ने बताया कि विजयगोपाल में जमीन के नीचे मुर्ति छिपी है। उसे बाहर निकालना हैं... मुनि श्री सुवीरसागरजी महाराज तुरंत वैतुल मध्यप्रदेश से वापस विजयगोपाल पहुँचे और मंदिर के पास खुदाई प्रारंम्भ कर दी जैसे ही जमीन की खुदाई प्रारंम्भ हुई दिनांक ६ मई २०१६ को प्रात: ठीक ६.४५ बजे जमीन से एक प्राचीन पार्श्वनाथ भगवान की एक प्राचीन मुर्ति प्राप्त हुई। इसका अवलोकन करते हुए श्री सतिश जैन, सौ. संगिता जैन एवं सुरज पेंढारी।

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र पालीताणा (गुजरात)

निर्वाण काण्ड वि. सं. 1701 में लिखी गई है। संस्कृत निर्वाण काण्ड में बताये अनुसार भगवान नेमिनाथ की निर्वाण प्राप्ति का समाचार पाकर, पांचों पांण्डवों के भाव बदल गये और शत्रुंजयगिरि पर ध्यानस्थ हो गये। उसमें से युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन तीन पाण्डव शुक्ल ध्यान में स्थिर होकर आठों कर्मों का नाश करके मुक्त हो गये।

इन पाण्डवों के संबंध में हरिवंश पुराण आदि में कथानक मिलता है कि- पाण्डवों ने भगवान नेमिनाथ से अपने भवांतर सुनकर मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली और कठिन तपश्चर्या करने लगे। उन्हें अनेक प्रकार की ऋद्धियां प्राप्त हो गई। किन्तु इन ऋद्धियों से क्या प्रयोजन था? अब तो उनकी दृष्टि बाह्य से हटकर, आत्मकेन्द्रित हो गई थी। वे अनेक वर्षों तक भगवान नेमिनाथ के साथ विहार करते रहे और अंत में शत्रुंजय पर्वत पर जाकर आतापन योग धारण करके विराजमान हो गये। एक दिन कौरवों का भान्जा कुर्यवर भ्रमण करता हुआ, उधर से निकला। पाण्डवों को देखते ही उसे अपने मामा के वध और मातुल कुल विनाष का स्मरण हो गया। स्मरण आते ही उसके मन में भयानक क्रोधाग्नि प्रज्ज्वलित हो उठी और उसने पाण्डवों से प्रतिशोध लेने का संकल्प कर लिया। वह नगर में गया और लौटकर लोहे के मुकुट, कुन्डल, हार, केयूर आदी बनाकर लाया। उसने उन्हें अग्नि में तपाया। उन तप्त आभूषणों को पाण्डवों को पहना दिया। पाण्डवों के अंग जलने लगे। किन्तु उन्हें तो बाह्य की सुध ही नहीं थी, उनका उपयोग तो आत्मा में केन्द्रित था। वे शुक्ल ध्यान में लीन होकर कर्म शत्रुओं का संहार कर रहे थे। उधर कर्यवुर उनके तिल तिल जलते हुए अंगो को देखकर मन में अत्यंत मुदित हो रहा था और अपने प्रतिशोध की सफलता पर गर्व कर रहा था। शुक्ल ध्यान के बल से युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन ने 4 घातियां एवं 4 अघातियां कुल 8 कर्मों का नाश कर दिया और वे मुक्त हो गये। उनके जन्म-मरण की श्रृखंला का अंत हो गया।

पांडव शुभ तीनं सिद्ध लहीनं, आठ कोड मुनि मुक्ति गये,
शत्रुंजय पूजो, सनमुख हूओ, शांतिनाथ शुभ मूल नयो

नकुल और सहदेव पूर्णत: आत्म विजय नहीं कर पाये। अत: वे कर्मों का संपूर्ण नाश नहीं कर सके वे सर्वार्थसिद्धि विमान में अहमिन्द्र बने। इस प्रकार शंत्रुजय पाण्डवों की निर्वाण भूमि के रूप में विख्यात है।

यहां पर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर का परिचय निम्नांकित है।

श्री सिद्धक्षेत्र पालीताणा
श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन पहाड़ मंदिर

पालीताणा पर्वत पर एक दिगम्बर जैन मंदिर है। पर्वत की चढाई लगभग 4 किलो मीटर है। पत्थर की सड़क तथा सीढ़ियां 3500 बनी हुओ हैं। जिनके कारण चढ़ाई सरल हो गई है।

पर्वत पर श्वेताम्बर समाज के लगभग 3500 मंदिर है। इन सराग वैभव सम्पन्न जिनालय के हार में मणि के समान जाज्वल्यमान दिगम्बर जैन मंदिर सुशोभायमान है। इस पर्वत पर मुख्य दो टोंक है। नव टोंक पर कोई दिगम्बर जैन मंदिर नहीं है। मोटी टोंक पर श्वेताम्बर मंदिरों के केन्द्र में परकोटे के भीतर एक प्राचीन श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर है। लगता है, मानों दैदीप्यमान तारावली के बीच में पूर्ण चन्द्रमा के समान चमक रहा हो। यह मंदिर पर्याप्त प्राचीन है। इनमे नव वेदियां बनी हुई है।

मुख्य वेदी में मूलनायक श्री 1008 शांतिनाथ भगवान को श्वेत पाषाण की भव्य पद्मासन प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा वैशाख शुक्ल-5 वि. सं. 1686 में बादशाह शाहजहान के समय में अहमदाबाद के दिगम्बर जैन हुमड जाति के सेठ श्री संघपति रतनशी डुंगरशी के परिवार द्वारा धूमधाम से मूलसंघ, सरस्वती गच्छ, बलात्कारगण, कुन्दकुन्दान्वर्य के भट्टारक सकलकीर्ति, उनके शिष्य भुवनकीर्ति, तत्शिष्य ज्ञानभूषणं, तत्शिष्य विजयकीर्ति, तत्शिष्य शुभचन्द्र, तत्शिष्य सुमतिकीर्ति, तत्शिष्य गुणकीर्ति, तत्शिष्य वादिभूषण, तत्शिष्य रामकीर्ति, तत्शिष्य भट्टारक पद्मनंदी ने कराई थी। जैसा कि इसके मूर्ति लेख से ज्ञात होता है।

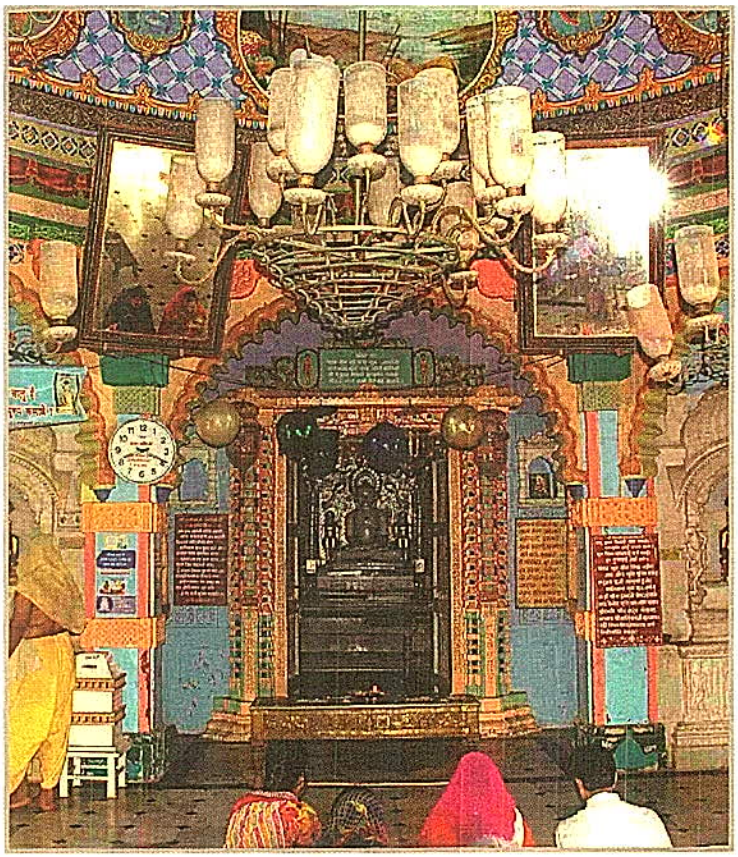

पालीताना पहाड़ के मंदिर जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

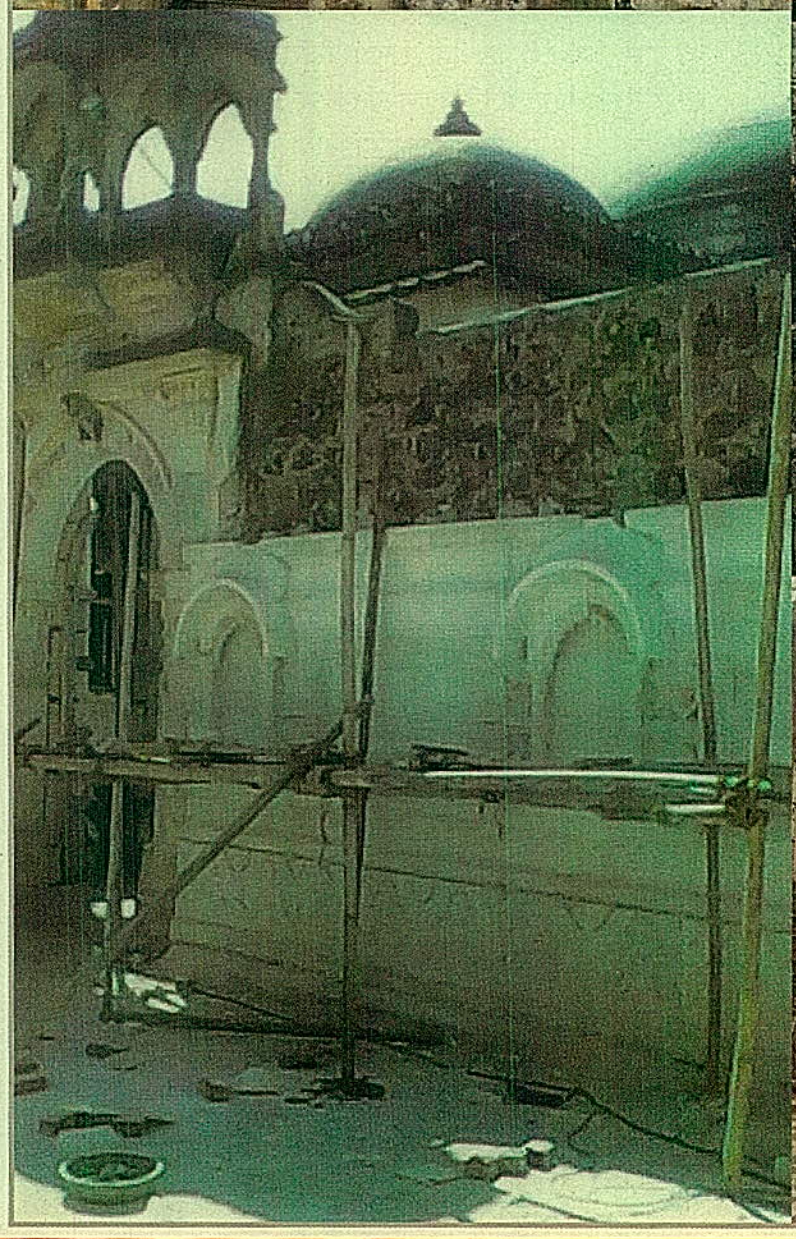

पालीताना पहाड़ मंदिर की बाउंड्रीवाल के जीर्णोद्धार के पश्चात की स्थिति

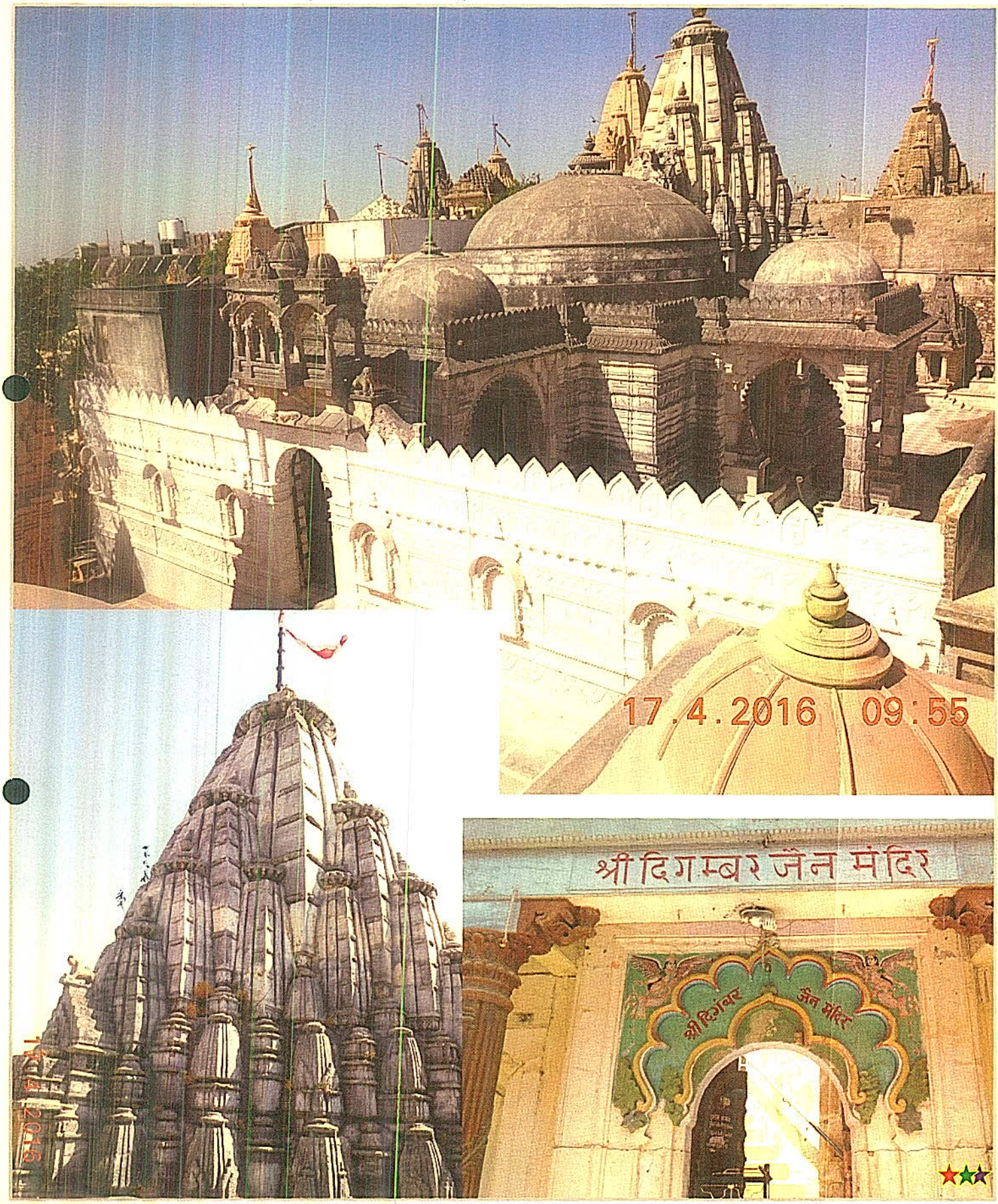

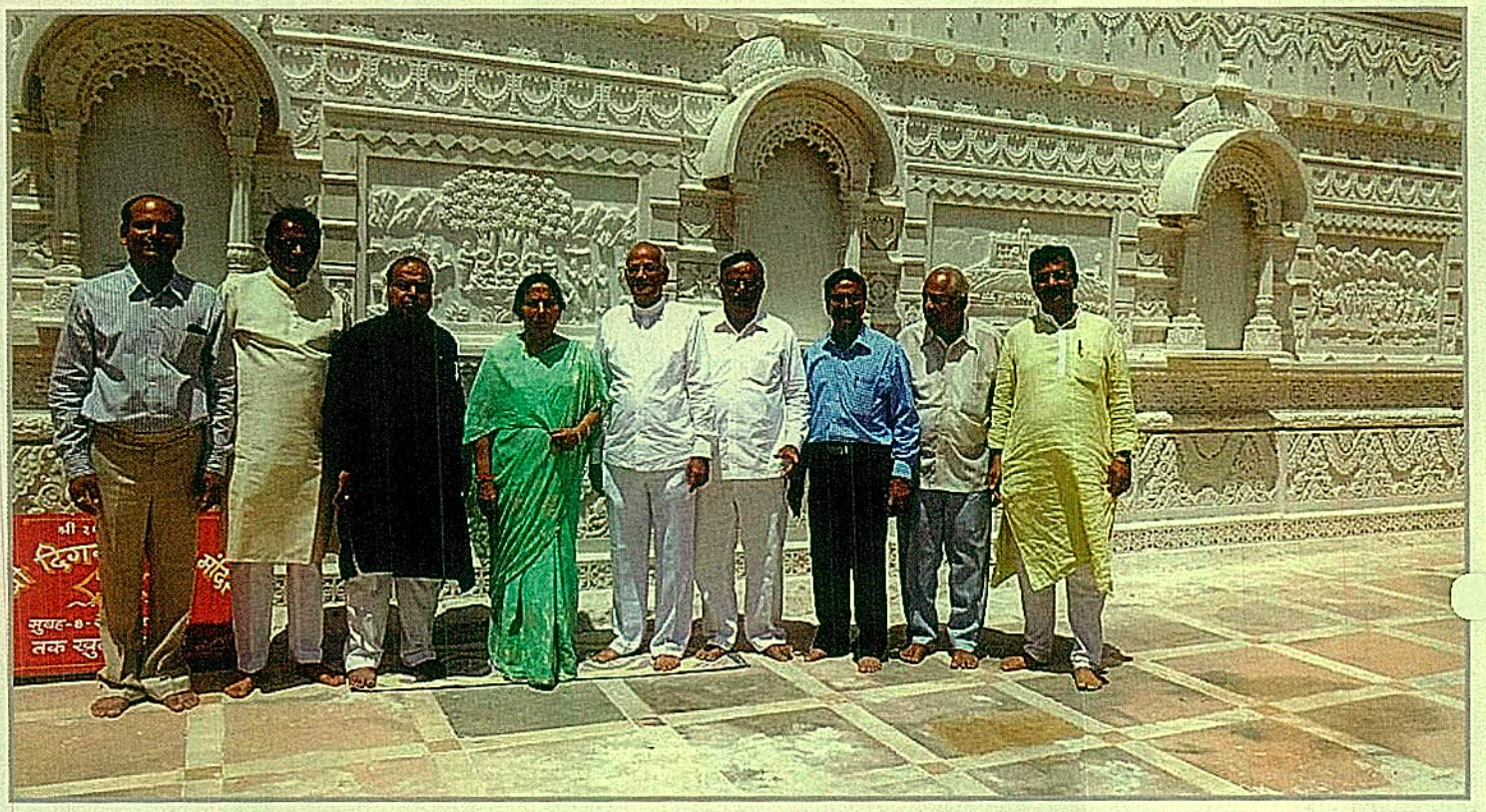

पालीताना क्षेत्र पर दिनांक 26 अप्रैल 2016 को अवलोकन करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं पालीतानाा क्षेत्र के पदाधिकारी/सदस्यगण वायें से आर्किटेक्ट शीतल कोठारी, गुजरात अंचल के अध्यक्ष श्री अजित मेहता, महामंत्री श्री संतोषकुमार जैन पेंढारी, राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन, श्री सोभागमलजी कटारिया, मैनेजिंग ट्रस्टी श्री कुमारभाई शाह, गुजरात अंचल के मंत्री श्री सुरेशभाई गांधी तथा श्री संदीप जैन

पालीताना पहाड़ मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से रु. पॉच लाख का चेक प्रदान करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन तथा महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी

पालीताना क्षेत्र पर दिनांक 26 अप्रैल 2016 को अवलोकन करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं पालीतानाा क्षेत्र के पदाधिकारी/सदस्यगण

।। श्री १००८ शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर।।

पालीताणा पहाड़ मंदिर के जीर्णोद्धार का अनुमानित खर्च

		रुपये
1.	पहाड़ के उपर मंदिर के गढ की बाहर की दिवाल के उपर उपर जैन धर्म के चिन्होंवाला कारविन किया हुआ मार्बल के ब्लोक लगवाने का खर्च-दिवाल का लगभग माप 70x13=910 Sq. Feet @ Rs. 4000	36,00,000
2.	पहाड़ के उपर मंदिर के गढकी बाहरकी दक्षिण दिशा की दिवाल के उपर कार्विन किया हुवा मार्बल लगवाने का खर्च 50x13=650 Sq. Feet @ Rs. 4000	26,00,000
3.	पहाड़ के मंदिर के गढ की दिवाल में अंदर की साइड में कारविन किया हुआ मारबल लगाने का खर्च 6000 Sq. Feet@Rs. 4000	2,40,00,000
4.	दिवा का मेन गेट छत्री और जरुखे संपूर्ण मार्बल में बनाने का खर्च.	30,00,000
5.	मंदिर की बाहर की साइड में फ्लोरिंग लगाने का खर्च 2000 Sq. Feet@Rs.700	14,00,000
6.	मंदिर के अंदर कलर काम करने का खर्च	15,00,000
7.	मंदिर के बाहर के भाग में सफाइ करके कलर काम करने का	20,00,000
8.	पानी के लिए दुसरी अंडर ग्राउन्ड टंकी बनाने के लिए	8,00,000
9.	पहाड़ के मंदिर का मेन गेट जर्मन सिल्वर में नया बनाने का	20,00,000
10.	मंदिर के अंदर तीन गेट जर्मन सिल्वर में या तो ब्रास में बनाने का एक गेट का खर्च. 4,00,000	18,00,000
11.	मंदिर की पीछे की साइड में चार नए कमरे बनाने का खर्च	25,00,000
12.	24 मूर्ति- खड़गासन गढ की दिवार के उपर के हिस्से में लगवाने का खर्च अष्टधातु में- 24@9,00000	2,16,00,000
	योग	6,52,00,000

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी इस कार्य में अपना सहयोग प्रदान कर रही है, साथ ही सुदी पाठकों से निवेदन करती है कि वे भी जीर्णोद्धार के कार्य में अपना सहयोग प्रदान करें।

संपर्क : श्री कुमारभाई शाह 09426205163 | श्री अजयभाई वागडिया 09426957341 | डॉ. विरेशभाई शाह 09904954429

दिनांक 25 अप्रैल 2016 को हुई श्री गिरनारजी एक्शन कमेटी की सभा श्री सोभागमलजी कटारिया के कार्यालय में अहमदाबाद में सम्पन्न हुई में पारस्परिक चर्चा विचारणा करते हुए सदस्य गण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ संचालक डॉ. मोहनजी भागवत को जैन तीर्थवंदना की प्रति समर्पित करते हुए। राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ।

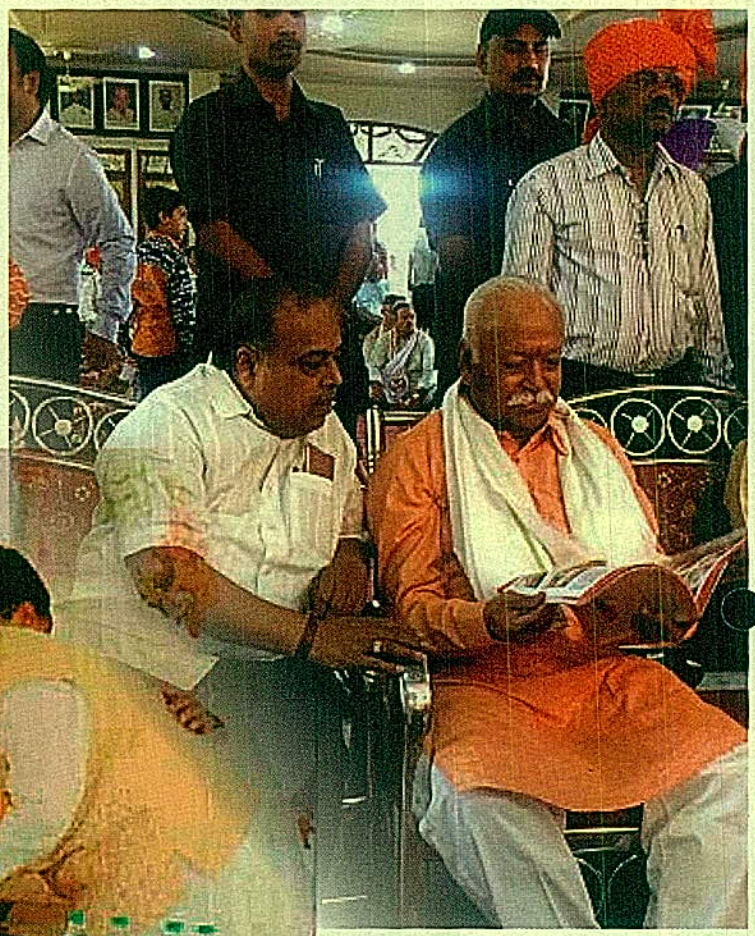

महाराष्ट्र राज्य मननीय मुख्यमंत्री श्री देवेंद्रजी फडणवीस, राज्य के ऊर्जामंत्री श्रीचंद्रशेखरजी बावनकुले, सांसद श्री अजय संचेती एवं जैन सेवामंडल के अध्यक्ष श्री मनीष मेहता को जैन तीर्थवंदना की प्रति समर्पित करते हुए। राष्ट्रीय महामंत्री संतोष जैन पेंढारी एवं अन्य।

लोकमत मिडिया के चेअरमेन सांसद श्री विजयबाबू दर्डा को जैन तीर्थवंदना की प्रति समर्पित करते हुए महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी।

Report of Bharatvarshiya Digambar Jain TirthaKshetra Committee
Karnataka Unit

The Activities of Karnataka are progressing under the guidance and inspiration of Param Pujya Swastee Shri Charukeerti Bhattaraka Pattacharya Swamiji of Shravanbelgola. The committee is also guided by the Param Pujya Bhattaraka Swamiji of Huncha, Moodbidri, Karkal, Sonda, N R Pura, Kanakagiri, Kambadahalli, Amminabhavi – Varur, and Lakkoli. The contribution of Poojya Shri Veerendra Heggade ji is also noteworthy. The Karnataka Unit has 100 members and the following members are the office bearers of Karnataka Unit.

- Shri D. R. Shah, Indi – President
- Shri Vinod Kumar Bakliwal, Honorary National Secretary – Central Committee
- Shri Ashok Sheti, Bangalore, Treasurer
- Shri Vinod Doddanavar, Belgaum, Secretary
- Shri S. Jitendrakumar, Bangalore
- Secretary, SDJ MIME Trust Shravanabelagola
- Shri Mahavir Jain, Nellur,
- Shri Prakash Jain, Gulbarga
- Shri Sheetal Ogi, Bijapur
- Shri Vijay Kumar Jain, Bidar,
- Shri G. P. Anantaraju, Mysoru
- Shri Tavanappa S Rokhade, Nargund.
- Shri G.A. Parshwanath, Mysore,
- Shri Sudhir Kusunale, Dharwad
- Shri Anedu Dineshkumar Jain, Moodabidri
- Shri Suresh Lengade, Belgaum
- Abhinandan Kocheri, Belgaum

Karnataka has rich heritage of Jain temple and monuments, spread across the entire state over an area of 1, 91,791 Sq Kms. Jainism in Karnataka received the royal patronage from various dynasties like Shatavanahas, Kadambas, Gangas, Chalukayas, Rashtrakutas, Kalayani Chalukayas, Hoyasalas, Vijayanagar Kings etc. Minor dynasties like the Rattas, Santaras, Senavaras, Nolambas, Kellas, Sendrapas, Callaketanas, etc also patronized Jainism. The patronage was extended over more than 15centuries.

The royal support to the religion led to construction of large number of temples across Karnataka. The royal patronage extended to Munis and Scholars helped them make tremendous literary and spiritual contribution. Subsequently the leadership of the community was taken up by the Bhattaraka peethas which is continuing till date.

Works undertaken by Tirthkshetra Committee Karnataka Unit

- The Karnataka Unit met on number of occasions at Shravanabelagola, Belgaum, Gulbarga, Mysore, and Moodabidri.
- The unit was privileged to host two editions of annual meeting of Bharatvarshiya Digambar Jain Tirtha Kshetra Committee i. e SAMVAD in the year 2010 at Mysore and 2012 at Moodbidri.
- The unit also hosted a seminar titled **"Jainism through Ages"** in association with Directorate of Archeology and Museums, Government of Karnataka at Mysore. The seminar was attended by more than 150 scholars including many from foreign countries. The proceedings of the seminar was published in the form of a book.
- Tirtha Kshetra Committee Karnataka Unit played a major role in identifying temples and persuading Department of Archeology and Museum, Government of Karnataka to take up reconstruction /restoration work of the following temples:

S No.	Name of the Jain Temple and its Location
1	Development work at Kote Shantinatha Basadi, Mysore
2	Development work at Shree Adinatha Basadi, Shreerangapatna, Dist: Mandya
3	Development work at Shree Chandraprabha Teerthankara Temple at Kallahalli Tq Hunsur Dist: Mysore
4	Flooring work at Kanakagiri Shree Kshetra, Dist; Chamarajnagar
5	Constructing compound wall around Basadi atop Kanakagiri hill and other works Dist: Chamarajnagar
6	Jeernodhahara of Kannadi Padmavati Temple near Saragur, Tq H.D. Kote Dist: Mysore
7	Jeernodhshara of Shri Vijaya Parashwanatha Temple at Chamarajanagara Town, Dist: Chamarajnagar
8	Jeernodhdhara of Jain Basadi at Jinanathapura Shravanabelagola, Dist; Hasaan
9	Jeernodhdhara of Thirkoota Jina Basadi at Chikkahanasoge Tq Hunsuru, Mysore Dist;
10	Jeernodhsdhara of Jain Basadi at Murukana Halli Tq Pandavapura Dist; Mandya
11	Jeernodhdhara of Jain Basadi at Kandagere Near Chikkanayakanahalli, Dist: Tumkur
12	Jeernodhdhara of Shree Parashwanathaswamy Temple at Aratal Tq Shiggon Dist Haveri
13	Jeernodhdhara of Shree Shantinatha Temple at Bankur Tq: Chittapura Dist Gulbarga
14	Jeernodhdhara of Bahubali Basadi at Chittapura Dist Gulbarga
15	Jeernodhdhara of Sahasraphani Parshwanatha Temple Bijapur
16	Jeernodhdhara of Jain Basadi Halasi Tq Khanapur Dist Belgaum
17	Construction of compound wall at Mahaveer Swamy Temple Bijapur
18	Jeernodhdhara of Jain Basadi Hampi, Dist: Ballari
19	Jeernodhdhara of Jain Basadi at Haduvahalli Tq Bhatkal Dist Uttar Kannada
20	Jeernodhdhara of Ainbasdi at Nidagal Tq Pavagada, Dist: Tumkur
21	Jeernodhdhara of Jain Basadi at Chikka Magadi, Tq Shikaripura Dist Shivamogga
22	Jeernodhdhara of Jain Basadi near Anegundi Hampi, Dist: Ballari. The above works are completed at a cost of more than Rs. 8 Crores by Directorate of Archeology and Museums, Govt. of Karnataka. The Karnatataka unit express its sincere gratitude to the Director and the staff of Directorate of Archeology and Museums.

There are large number of Jain monuments protected by Archeological Survey of India and Directorate of Archeology and Museums including the UNESCO world heritage site of Pattadakallu Tq: Dist: Bagalakot, and Hampi, Dist: Ballari.

Apart from these there are large number of Jain temples awaiting restoration in Karnataka. With the guidance and support of the central committee it will be possible to take up the development work of these temples in the near future.

Shri Parshwanat Temple Aratal Dist Haveri
Before Restoration

Shri Parshwanat Temple Aratal Dist Haveri
After Restoration

Jain Basadi Haduvahalli
Before Restoration

Jain Basadi Haduvahalli
After Restoration

Kanakgiri Kshetra
Before Restoration

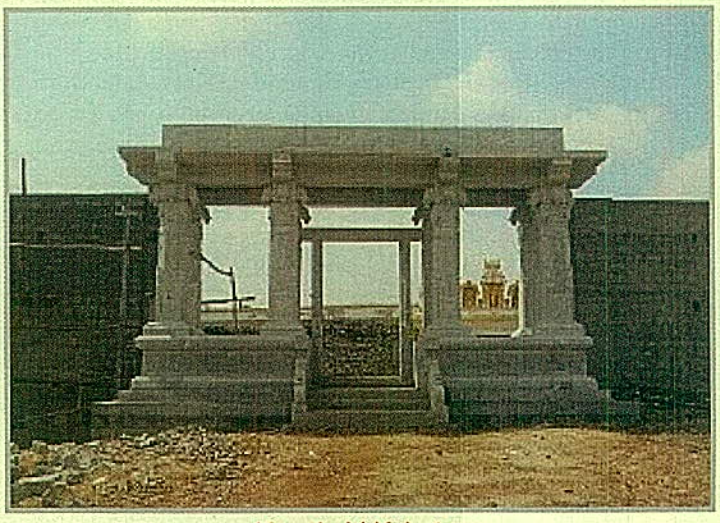

Kanakgiri Kshetra
after Restoration

Seven Grand Celebrations at Jinakanchi Digamber jain Mutt-Melsiththamur- Tamilnadu

Jina Kanchi Digamber Jain Mutt is located at Melsiththamur ,Villupuram ,District,Tamilnadu.It is headed by Sri Abhinava Lakshmisena Bhattaraka Bhattacharyavarya Maha Swamigal. Sri Jinakanchi Mutt , having 1500 year old tradition ,was originally established in Kanchipuram that was referred as Jina Kanchi. It was adorned by great Jaina acharyars including Samanthabadra, Sivakotti, Akalanka, Vamana, Mallisena , Pushpasena, etc; due to political and religious hostile and antagonistic activities against jains the Jain mutt was unable to function normally. After a lapse of a century or two, the mutt was re-established by Sri Virasenacharyar of Uppuvelur in 15th century in the present place-Melsiththamur; From that time onwards the Jain mutt has been functioning with vision and mission to guide the Jains of Tamilnadu. A series of Madathipathis assumed the leadership of the Mutt .The present Mutt head is 16th in the series; the Mutt that started functioning in a small shed with a roof partly thatched and partly country tiled ; over a period of two or three centuries , several works were undertaken and completed; these include construction of magnificent Parswanatha temple complex, Mutt building, Abishek Mandap, school for imparting religious education to children ; a grand temple car was made for rathotsava; it should be kept in mind that all these developmental activities were carried out in a situation where the rulers were unsupportive and sometimes antagonistic;

the Jinakanchi Mutt headquarters building completes its 100 th year . a solemn function was arranged to celebrate this event; (here one should keep it mind that but for this Mutt at Siththamur there would not be any trace of jains in Tamilnadu; such a catastrophic situation arose during the rule of a Chenji nayak;) the centenary celebration of SriMutt was combined with other six celebrations;

Prathishta of Bhagwan Varthamana Mahavira idol in the Parswanatha temple complex

Falicitation to Swasthi Sri Lakshmisen Bhattarak of Kolhapur on his completion of 60 years of service as Bhattarak and award of Ph.D.,by Shivaji Universith for his doctoral thesis related to Jina bimbha Prathishta

Falicitation to Sri Lakshmisen Bhattark ,N.R. Puram

Falicitation to Srimathi.Saritha M.K.Jain ,the first woman to assume office as president, in the 116 year history of Bharath Varshiya Digamber Jain Thirth Kshetra committee

Falicitation to Jain doctors and scholars who render great invaluable service to the community and religion

The celebrations , presided by Sri Lakshmisen Bhattarak of Kolhapur were grand and solem

It was grced by Sri Charukeethi Bhattarak of Mudubidri and Sri DhavalaKeerthi Bhattarak of Thirumalai-Arahanthagiri. the celebration was conducted in a newly built **Sri Mutt centenary hall** funded by BDJTKC.

Mel Siththamur, 10 km. from Gingee & 20 km. from Thindivanam, is the most important Jaina centre in Tamil nadu. It is the place where the famous JinaKanchi Mutt – religious head quarters of Jains of Tamil nadu situated. Jinakanchi mutt is heaed by the Pontiff who is decorated with the title, "Swasthi Sri Lakshmisena Bhattaraka Bhattacharyavarya Maha Swamigal". This is the centre that gave life to Jainism which was at the verge extinction in Tamil Nadu during 19th century. but for this centre there would not be a trace of jainism here in Tamilnadu now.The present day jains owe a lot &lot to this centre. There are two temples , one that is ancient, is dedicated to Sri Malai nathar (Rishaba) and the other which is the biggest in tamil nadu is dedicated to sri Parswanatha ,locally called Simmapuri natha. The Malai natha temple is infact originally a small rock with bas reliefs of Thirthankaras ; later a shrine was built around it.

The temple of Parswanatha is a temple cmplex with several shrines. Siththamur Jinalayam is almost 1000 years old. It requires attention, patronage for its conservation and up-keep.

★★★★

Jaina ascetics leave their holy foot prints on the sacred land-Tamilnadu

Sacred - Holy visit of 108 Sri Anthratmana Prasanna sagarji Maharaj and His Satsangh to Tamilnadu - the sacred and ancient land of Great Acharyas

His chosen path of vihar is not a beaten tract but the one with full of hurdles; reason: to reform the people whose morality and ethics, life of compassion, life free of passions get eroded day by day owing to modern living habits. Acharya Sri's mission and vision are to bring reform in men by changing their life styled based on the great principle of Ahimsa taught by Thirthankaras.

Tamilnadu , the sacred land of Digamber jains has been blessed with the Sri Vihar of 108 Sri Anthratmana Prasanna Sagar Adigalar, 108 Sri Piyush Sagar Adigalar and 105 Sri Ksullak parva sagar Adigalar . (Adigal in Tamil means great jaina ascetic)

Jainisn in Tamil land has a great history never seen anywhere in the Indian subcontinent; it is an ancient religion of Tamilnadu ; once spread from the southern tip of the Indian land mass, Kanyakumari to the border of Andhra Pradesh in the North, and those of Kerala and Karnataka in the west; Jains have left indelible land marks in the form of inscriptions, sculptures, paintings, caves , stone beds and above anything and everything they have bequeathed sacred Agamas to the mankind .Tamil nadu is the land of great Acharyas, Kundha Kundha, Akalanka, Samanthabadra, vamana, Pushpasena, Gunabadra, Thiruthakka devar, Ilanmko Adigal, Mallishena , the list is endless; there is no parallel in the whole world to the sacred jaina centre at Madurai dated back to 2500 BCE with 2500 years old Tamil-Brahmi inscriptions found in all the hills surrounding Madurai; the jaina centre at kazhugumalai (8th CE) where hundrds of great Munis performed Thapas, where 100 inscriptions are in vatteluththu script inscribed on rocks are found, where hundreds of Thirthankara images , images of Sasanadevathas Ambika and Padmavathi sculpted on virgin rocks stand as a solid evidence explaining the glorious past of Digamber Jainism in Tamil land; ; except to those of Ajantha , there is no parallel to the paintings of Siththannavasal Jaina cave temple in Pudukkottai district;

It is this sacred land that Munisri 108 Sri Anthrathmana Prasanna Sagar chose to undertake a vihar;

It is a great fortune for the people of Tamil nadu to have dharsan of Highly venerable Jaina Nirgrantha muni sri 108 Sri Antaratmana Prasanna sagar maharaj with His Satsang;people had a rare opportunity of receiving a symbol Ahimsa in jaina Nirgrantha ascetic ;

Although the devotees in Tamilnadu, after a great study and deliberations , prepared an extensive detailed route map for an unhindered ,trouble- free, vihar , but He chose a different route known for hurdles ! ?? Why? The preachings of thrthakara ,the Ahimsa principle should reach the trouble spots; those who are following a path of himsa, they should be shown the right and correct path that is brightened by the ever glowing Ahimsa light; muni maharaj's sacred entry to Tamilnadu is non-traditional; generally jaina ascetics or devotees from other states come to Tamilnadu from Karnataka side; but here our highly revered Munimaharaj put his lotus feet from Andhra side;

Muni maharaj preached Ahimsa and other house holder's dharma to people who gathered in large numbers; he patiently delivered sermons whenever he stopped for a brief rest as per the rules of Yathiyachar; people realized the usefulness of adopting Ahimsa dharma for a peaceful contended, mutually helping life;

The first jain centre in Tamilnadu where Swamiji halted was Puzhal (13-3-2016); it is an ancient Digamber jaina centre . As Digamber jains of Puducherry (Pondichery) with great reverence invited Sat Sang for Celebrations of 2615th Mahavir Janma kalyan , the Satsangh started the vihar from puzhal and covered few important places including Thiruparuththikundram (the ancient Jinakanchi), Vandavasi, Sri KundhaKundha hill-Ponnur, Melsiththamur , Thindivanam

A grand reception with great reverence was given to Munisangh on 20-3-2016 at the Sri Jangam Poondi Sridhar Nainar Digamber jain Asrma complex located at the foot of Sri Kundha Kundha sacred hill- otherwise called Ponnur hill. Jubilant devotees in large number came from different places including Puduchery to pay their obeisance and salutations to the Munisang.

In the holy presence of Munimaharaj 108 Muni Antharathmana Prasanna sagar, Munisri 108 Sri Piyush Muni maharaj, 105 Sri Parvasagara Shullak maharaj, ,Lakshmisena Bhattarak swamiji,the head of Digamber Jain Sri Mutt, Melsiththamur and Sri Dhavala Keerthi Bhattark of Thirumali-Arahanthagiri Sri Mutt, JinaDharma flag was hoisted by the great Philanthropists M.K.Jain and Saritha,M.K.Jain. This was followed by three grand celebrations organized by the sri Kundha Kundh Syadvad Digamber jain Trust headed by Sri Srenikraj . The three celebrations include

Felicitations to Srimathi SarithaM.K.Jain for her selection as the President of Bharath varshiya Digamber jain Thirth Kshetra Committee – a great honour bestowed on this soul that is fully dedicated for the cause of Jinadharma; indeed she has created history by becoming the first woman president of the 116 old Thirtha Kshethra committee ; for

her munificent service rendered for the cause of Jinadharma she was already conferred with titles which include Abinava Dhana chinthamani, Mahila rathna, Sravika Rathna, Sravika Siromani, Jinadharma parayani, Dhivya nari ratna,. The Thirukkural research centre hall where the felicitation function was conducted was overflowing with people. Countless number of Jaina organisations, individuals congratulated and showered their blessings on Srimathi Saritha M.K.Jain.

2.This was followed by foundation laying ceremony for a yathri niwas named after the highly revered Nirgrantha Muni Maharaj Acharya 108 Sri Puspathantha sagar. With blessings of 108 Sri Antharathmana Prasanna sagar Muni maharaj, 108 Sri.Piyush Munimaharaj and 105 Sri Parvasagar Shullak mahara Sri M.K.Jain and Srimathi Saritha M.K.Jain laid the foundation stone.

3. The first annual day celebrations of Sri jangampoondi Sridhar Nainar Digamber jain student Hostel , distribution of scholarship forms for students , distribution of incentives to Archakars of Digamber Jinalayam were conducted at the venue.

Revered 108 Sri Antharathmana Prasanna sagar Muni maharaj ,exponent of discourses, a great preacher delivered a sermon that had a mesmerizing effect on the audience. It was a free flowing discourse; his bright and exalted oratory attracted people at the very first sight , it should be mentioned that many in the audience yet to learn Hindi. Munisang conducted a very big ,magnificent Vidhan in the famous hall of Thirukkural Research centre. After staying for two days at the foot of the sacred hill where Achaya Kundha Kundha performed thapas and wrote sacred Agamas and Thirukkural, Munisangh resumed their vihar.

News input by
Dr.Kanaka.Ajithadoss and
Pon.Rajendra Prasad

अखिल भारतीय निबन्ध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता

आयोजक - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
अन्तिम तिथि - 31 जुलाई 2016
शब्द सीमा - 2500 शब्द

वर्ग-1, युवावर्ग
विषय- जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका
पात्रता- 45 वर्ष से कम आयु का कोई भी दि. जैन युवा

वर्ग-2, महिलावर्ग
विषय- जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता
पात्रता- कोई भी दि. जैन महिला

नियम-

1. लेख ए-4 आकार के कागज पर सुवाच्य हस्तलिपि या कम्पोज कराकर डबल स्पेस में 2 प्रतियों में भेजें।

2. युवा वर्ग के प्रतिभागी आयु का प्रमाण पत्र भेजें।

3. लेख के उपर एक पृष्ठ पर अपना पूरा नाम, पत्राचार का पता, फोन नं./सेल नं. लिखें।

4. 11 से अधिक लेख एकत्र कर एक साथ भिजवाने वाले श्रावक/श्राविकाओं को विषेष पुरस्कार दिया जायेगा।

5. दोनों वर्गों हेतु प्रथक-प्रथक पुरस्कार राषि निमन्वत् है-

प्रथम पुरस्कार - 21000.00 एवं प्रमाण पत्र
द्वितीय पुरस्कार- 11000.00 ,,
तृतीय पुरस्कार- 5000.00 ,,

सभी प्रतिभागियों को भेंट स्वरूप साहित्य एवं प्रमाण पत्र भी दिया जायेगा।

6. लेख भेजने का पता- डॉ. अनुपम जैन
प्रधान सम्पादक- जैन तीर्थवंदना
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर,
इन्दौर-452009
anupamjain3@rediffmail.co.in

संतोष जैन पेंढारी
महामंत्री

नागदा तीर्थ एवं यहां का जीर्ण-शीर्ण पार्श्वनाथ मंदिर

-शान्तिलाल जैन (जांगड़ा), उदयपुर

राजस्थान के उदयपुर जिला मुख्यालय से २० कि.मी. की दूरी पर स्थित एकलिंगजी (कैलाशपुरी) नामक कस्बे के समीप नागदा नामक पुरातन स्थान है। नागदा वैष्णव, शैव और जैन संस्कृतियों के संगम तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध रहा है। जैनतीर्थ की दृष्टि से वर्तमान में श्वेताम्बर जैनों से संबद्ध यहां अद्भुतजी तीर्थ है। अद्भुतजी के मंदिर में मूलनायक शान्तिनाथ भगवान की ९ फु ट ऊंची श्याम पाषाण की विशाल प्रतिमा है। इसी मंदिर के पास आलोक पार्श्वनाथ नाम से एक छोटा सा देवालय है। इसके अतिरिक्त अद्भुतजी मंदिर के समीप दो और पुरातन जैन मंदिर है जिनका जीर्णोद्धार श्वेताम्बर जैन समुदाय द्वारा करवाया जा रहा है। इन मंदिरों के समूह से थोड़ी दूरी पर एकलिंगजी के रास्ते की ओर खिमजादेवी मंदिर की पहाड़ी के नीचे की ओर ढलान पर एक मंदिर जीर्ण-शीर्ण रूप में विद्यमान है (चित्र १)। **इस मंदिर के दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर होने के स्पष्ट रूप से प्रमाण उपलब्ध हैं।**

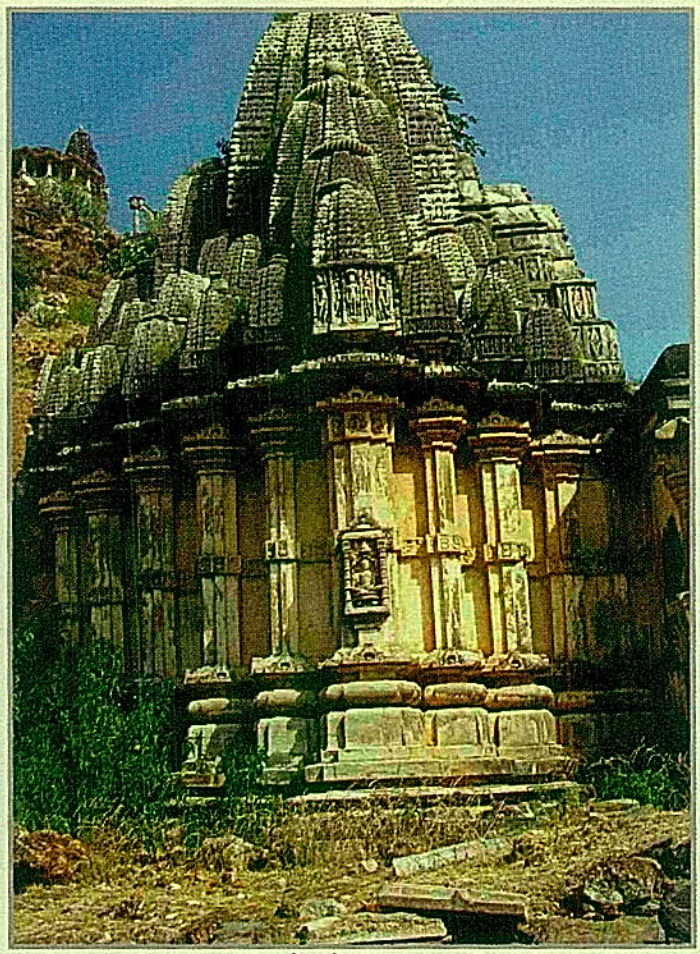

मंदिर का बांयी ओर से लिया गया चित्र, चित्र 1

जैन साहित्य की तीर्थ-वंदनाओं एवं अन्य कृतियों में नागदा नामक स्थान का विवरण - दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों ही मान्यताओं के जैनाचार्यों, साधुओं एवं कवियों ने अपनी तीर्थ वंदनाओं से सम्बन्धित एवं अन्य कृतियों में इस स्थान का तीर्थ के रूप में उल्लेख किया है। दिगम्बर जैन परम्परा की तीर्थ-वंदनाओं से सम्बन्धित कृतियों में प्राकृत निर्वाणकांड का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अन्तर्गत अतिशय क्षेत्रकांड की प्रथम गाथा में सर्व प्रथम नागद्रह (णायद्दह) में स्थित भगवान पार्श्वनाथ एवं मंगलपुर में स्थित भगवान अभिनंदनदेव की प्रतिमाओं की वंदना करते हुये लिखा है:-

पासं तह अहिणंदण णायद्दहि मंगलाउरे वंदे।

श्री मदनकीर्ति (१२-१३वीं सदी) ने अपनी कृति 'शासनचतुस्त्रिंशिका' में नागह्रदेश्वर कहकर यहां के पार्श्वनाथ का स्तवन किया है।[१] श्री उदयकीर्ति (१२-१३वीं सदी) ने अपनी अपभ्रंश रचना 'तीर्थवंदनाऽ में नागद्रह के स्वयंभूदेव पार्श्व कहकर उनकी वंदना की है।[२] दिगम्बर जैन परम्परा की उक्त कृतियों के उक्त उल्लेखों के अतिरिक्त इसी परम्परा के कुछ और रचनाकारों ने भी नागदा तीर्थ का उल्लेख किया है। श्री गुणकीर्ति (१५वीं सदी) ने 'नागद्रह नगर के पार्श्वनाथऽ एवं श्री मेघराज (१६वीं सदी) ने 'नागेन्द्र के पार्श्व जिनेन्द्रऽ के रूप में यहां के उल्लेख अपनी तीर्थ वंदनाओं सम्बन्धी कृतियों में किये हैं।[३] जयसागर (१७वीं सदी) ने यहां का उल्लेख अपनी तीर्थ जयमाला में किया है। श्वेताम्बर जैन तीर्थमालाओं में भी नागह्रद तीर्थ के उल्लेख हैं। तपागच्छीय मुनि सुन्दरसूरि (१५वीं सदी ई.) द्वारा नागह्रद पार्श्वनाथ स्त्रोत की रचना ... गई। श्री जिनतिलक सूरि एवं श्री शीलविजय की तीर्थामालाओं में नागद्रह का उल्लेख हुआ है। श्री शीलविजयजी की तीर्थमाला में नागद्रह के साथ एकलिंग महादेव का भी स्पष्ट उल्लेख किया गया है। दिगम्बर परम्परा के आचार्य श्री मदनकीर्ति एवं श्वेताम्बर परम्परा के श्री शीलविजयजी के विवरणों से स्पष्ट होता है कि प्राचीन जैन तीर्थ नागह्रद अथवा नागद्रह नामक स्थान एकलिंगजी के समीप का ही यह स्थान रहा है।

इतिहासवेत्ताओं के विवरण - विभिन्न इतिहसावेत्ताओं ने भी इस तीर्थ के इतिहास इत्यादि के बारे में इतिहास सम्बन्धी पुस्त एवं लेखों में उल्लेख किया है। इन उल्लेखों के अनुसार यहां का पद्मावती मंदिर पूर्वकाल में प्रसिद्ध पार्श्वनाथ मंदिर था। यह मंदिर दिल्ली के बादशाह इल्तुतमिश के शासनकाल (१२१२-१२३६ ई.) के समय ध्वंस्त कर दिया गया। अलाउ (।संन) पार्श्वनाथ नाम के जिनालय में वि.सं. १३५६ (सन् १३००) एवं वि. सं. १३९१ (सन् १३३५) के लेख विद्यमान होना लिखा हैं।[४] इन लेखों में जिनालयों के पुनरुद्धार का विवरण होना एवं वि. सं. १३५६ के लेख में दिगम्बर जैन परम्परा के मूलसंघ का उल्लेख होना बताया है।[५] पासड़देव और संघाराम ने १२९९ ई. में पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा यहां स्थापित करवाई थी। १३३४ ई. में केल्हा ने पार्श्वनाथ गर्भगृह का जीर्णोद्धार करवाया। पार्श्वनाथ मंदिर के बारे में लिखा है - इस देवालय में एक बड़ी ही रुचिकर प्रतिमा है, जिसमें शिलाफलक के मध्य में आभा-मंडल युक्त ध्यानस्थ जिन, दोनों पार्श्वों में तिकोनी टोपी वाले चंवरी धारक गणधर तथा हवा में उड़ते हुए देवादि उत्कीर्ण हैं।[६] यहां

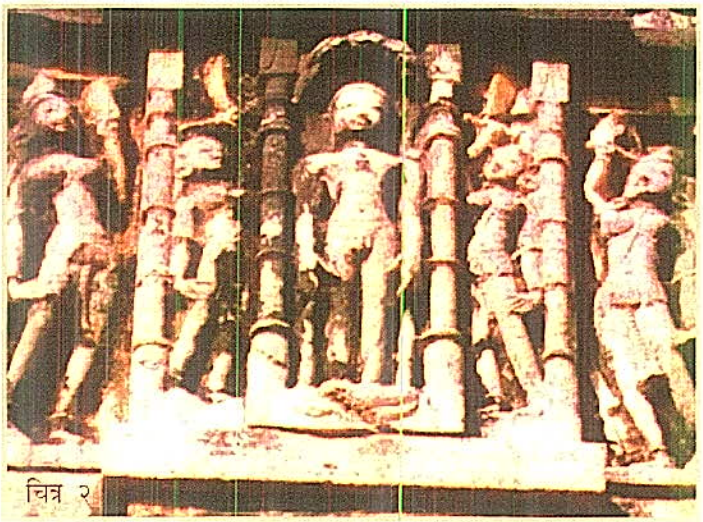

मंदिर के बांयी ओर इसके शिखर के मूल में उत्कीर्ण भगवान पार्श्वनाथ की नग्न खड़गासन प्रतिमा का चित्र

मंदिर के पीछे शिखर के मूल में उत्कीर्ण नग्न खड़गासन तीर्थंकर प्रतिमाओं के चित्र

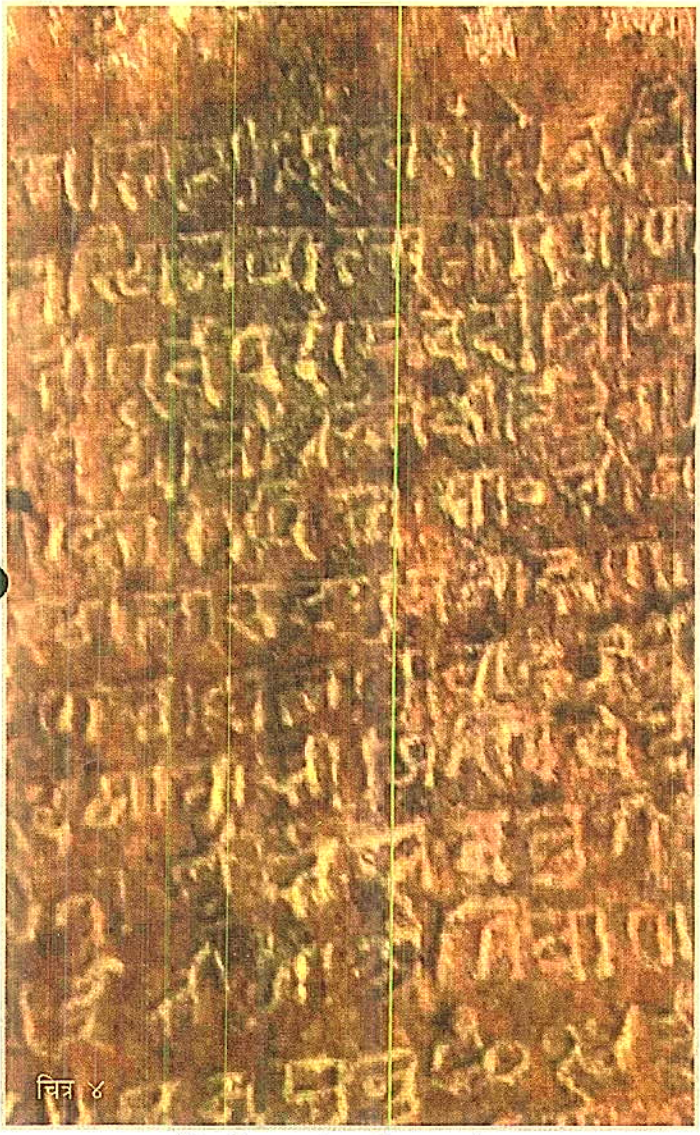

मंदिर के सभा मंडप के एक स्तंभ पर सामने से बायीं ओर का उत्कीर्ण लेख

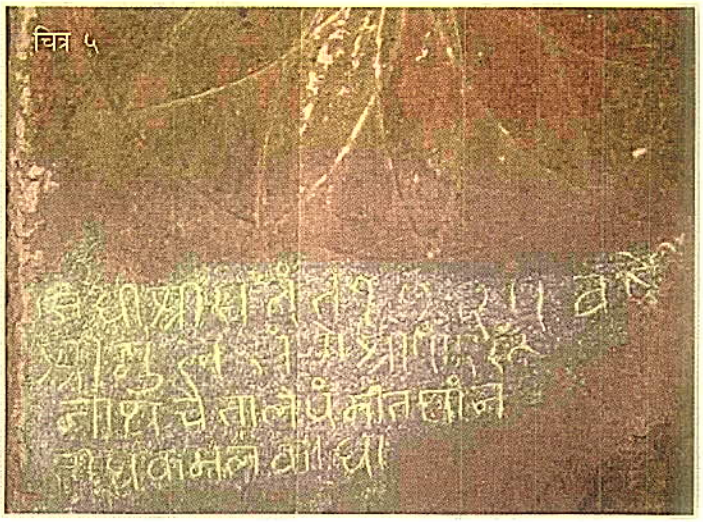

मंदिर से संबद्ध रहे पाषाण पट्ट पर उत्कीर्ण रहे संवत् १७२५ के लेख में मूलसंघ के साथ पार्श्वनाथ चैताले लिखा था

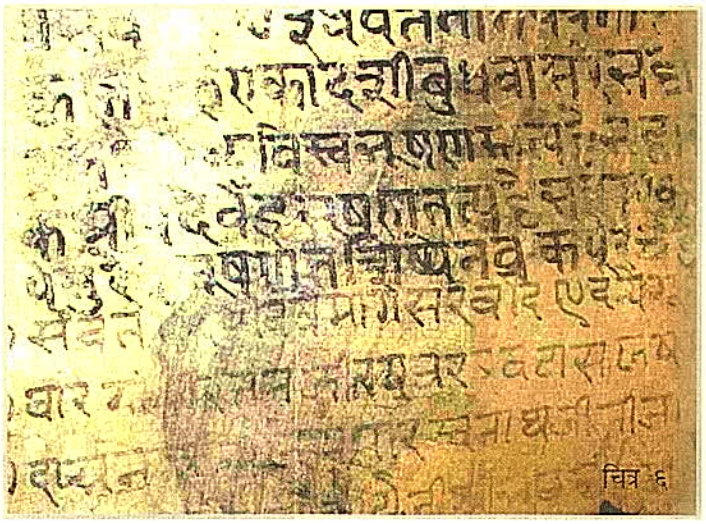

मंदिर की भीतरी दीवार पर एक स्थान पर लिखा एक भित्ति लेख

अद्भुतजी के मंदिर में सन् १४३७ ई. में एक व्यापारी सारंग के द्वारा, कुम्भा के शासनकाल में शान्तिनाथ की विशाल प्रतिमा स्थापित करवाई गई। दिगम्बर परम्परा की तीर्थ वंदनाओं एवं इतिहासवेत्ताओं के उक्त उल्लेखों के अनुसार नागदा तीर्थ दिगम्बर परम्परा का भी एक महत्वपूर्ण तीर्थ माना गया है - इस तथ्य को श्वेताम्बर परम्परा के तीर्थ विषयक आधुनिक साहित्य के लेखकों द्वारा स्वीकार किया गया है। इस विषय में एक विवरण में इस बारे में कई संदर्भ भी दिये गये हैं।[७]

दिगम्बर जैनों में नागदा जाति - वर्तमान में दिगम्बर जैनों में नागदा जाति विद्यमान है इस जाति के अधिकांशत: लोग पूर्व में मेवाड़ क्षेत्र में निवास करते थे। इस जाति के बारे में यह मान्यता है कि नागदा में निवास करने वाले क्षत्रिय जाति के एक समूह विशेष ने दिगम्बर जैन परम्परा के एक आचार्य से धर्मोपदेश सुनकर जैन धर्म के संस्कारों को अंगीकार किया। इसी समूह से दिगम्बर जैनों की नागदा नामक जाति का निर्माण हुआ। १५वीं शताब्दी में भट्टारक श्री ज्ञानभूषण ने नागदा जाति के इतिहास से सम्बन्धित 'नागदारास' नामक कृति की रचना की।

तीर्थ वंदनाओं, इतिहासवेत्ताओं इत्यादि के विवरणों का विशेषण - तीर्थ वंदनाओं इतिहासवेत्ताओं इत्यादि के उक्त विवरणों का विशेषण करने पर निम्न बातें सामने आती हैं: -

(१) मध्यकाल में नागदा नामक यह स्थान जैन समुदाय की दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं का प्रमुख तीर्थ रहा है। यहां दिगम्बर जैन परम्परा का पार्श्वनाथ तीर्थ अधिक पुरातन रहा है। संभवत: यह इस नगर के प्रारम्भिक इतिहास से जुड़ा हुआ रहा हो।

(२) प्राकृत निर्वाणकांड के इस स्थान के विवरण से यहां पार्श्वनाथ की प्रतिमा होने के संकेत मिलते हैं किन्तु श्री मदनकीर्ति ने यहां जिनेन्द्र भगवान की अलक्ष्य (अदृश्य) मूर्ति का नागह्रदेश्वर कहकर स्तवन किया है। इससे यह प्रतीत होता है कि श्री मदनकीर्ति के समय यहां का पार्श्वनाथ मंदिर इल्तुतमिश के शासनकाल में ध्वंस्त किये जाने के कारण ध्वंस्त रूप में ही रहा हो। इनके समय के बाद में इसका पुनरुद्धार होना संभव है। पुनरुद्धार के विवरण विभिन्न लेखों में विद्यमान रहे हैं।

(३) मध्यकाल में नागदा नामक इस स्थान पर दिगम्बर एवं श्वेताम्बर जैनों के कई मंदिर विद्यमान रहे थे। भगवान पार्श्वनाथ से सम्बन्धित एक से अधिक जैन मंदिरों की मध्यकाल में यहां विद्यमानता ज्ञात होती है। ध्वस्त किये जाने पर पुनरुद्धार किया गया मंदिर कौनसा था यह कहना अत्यंत कठिन है।

भ. पार्श्वनाथ से सम्बन्धित जीर्ण-शीर्ण दिगम्बर जैन मंदिर की विद्यमानता - नागदा में खिमजदेवी के मंदिर वाली पहाड़ी के नीचे की ओर ढलान पर एक मंदिर जीर्ण-शीर्ण रूप में है जिसके बारे में ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। यह मंदिर एकलिंगजी से रामा गांव की ओर जाने वाले मार्ग के समीप बाघेला तालाब के दायीं ओर स्थित है। इस मंदिर को देखने से इसके दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर होने से सम्बन्धित स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध होते हैं। इस मंदिर के दाँहिने, बायें एवं पीछे की बाहरी दीवारों पर जैन तीर्थंकर मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। मंदिर के बाहर बायीं और दायीं ओर की दीवार पर नीचे से ऊपर शिखर की ओर एक के ऊपर एक जैन तीर्थंकर मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। नीचे एवं मध्य की मूर्तियां पद्मासन स्थिति में हैं। दोनों ओर ऊपर वाली मूर्तियां नग्न कायोत्सर्ग मुद्रा (चित्र २) में हैं जिनके सिर के ऊपर फणयुक्त नाग है। मंदिर के पीछे की दीवार पर तीन खडगासन नग्न मूर्तियां उत्कीर्ण हैं (चित्र ३)।

इस मंदिर के गर्भगृह में वर्तमान में कोई मूर्ति नहीं है, किन्तु गर्भगृह के बाहर के स्तम्भ एवं दरवाजे पर तीर्थंकर मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। कुछ लेख इत्यादि भी विभिन्न स्थानों पर उत्कीर्ण हैं। मुख्य लेख पुरातन होने एवं कुछ भाग मिट जाने के कारण पढ़े जाने जैसे नहीं हैं। नागदा के इस मंदिर से संबंधित लेख इत्यादि के विवरण भी, उक्त वर्णित अन्य शिलालेखों के विवरणों की तरह इतिहासवेत्ताओं एवं विद्वानों द्वारा उल्लेखित किये हुए प्रतीत होते हैं, जिन्हें ज्ञात किये जाने चाहिए। मंदिर के सभा मंडप में एक स्तंभ पर दो प्रशस्ति लेख उत्कीर्ण प्रशस्ति लेख अस्पष्ट हैं परंतु इनके कुछ शब्द स्पष्ट पढने में आते हैं। दोनों लेख संवत् १४३९ के हैं। एक लेख के प्रारंभ में 'स्वस्ति श्री मूलसंघे' एवं 'बलात्कार गणे 'शब्द स्पष्ट पढने में आता है (चित्र ४)। मंदिर के निर्माण की प्रेरणा एवं इसमें जिनबिंबों की संवत् १४३९ में प्रतिष्ठा करवाने अथवा जीर्णोद्धार की प्रेरणा देने वाले जैनाचार्य अथवा भट्टारक दिगम्बर जैन परम्परा के मूलसंघ-नंदीसंघ के बलात्कारगण के रहे हैं। प्रतिष्ठा अथवा जीर्णोद्धार से संबद्ध समारोह में सान्निध्य प्रदान करने वाले संतों का नाम ज्ञात नहीं हो पाया है। मुख्य लेख में इन संतों के पूर्ववर्ती के रूप में माघनंदी का उल्लेख है। लेख से सम्बन्धित संस्कृत के विवरण का प्रारम्भिक पद दक्षिण के विजयनगर के एक शिलालेख के प्रारम्भिक पद का ही रूप है। मध्ययुगीन दिगम्बर जैन साधुओं के संघों के वृतान्त से सम्बन्धित एक पुस्तक में प्रकाशित संवत् १४४२ का यह शिलालेख विजयनगर के कुन्थुनाथ के एक जिनालय के निर्माण से सम्बन्धित है। यह लेख नंदीसंघ बलात्कारगण की प्राच शाखा के भट्टारक धर्मभूषण के समय का है।[८] विजयनगर के शासक हरिहर के शासनकाल में संवत् १४१२ में एक प्रतिष्ठित राजपुरुष द्वारा अनन्त जिनालय का निर्माण करवाकर उसे अपने गुरु माघनंदी को समर्पित करने का भी उल्लेख प्राप्त होता है।[९] इन विवरणों से ज्ञात होता है कि नागदा के इस मंदिर एवं विजयनगर से सम्बन्धित उक्त मंदिरों के निर्माण एवं उनमें जिनबिंबों की प्रतिष्ठा कार्य की प्रेरणा देने वाले भट्टारक अथवा संत एक ही परंपरा के होकर एक दूसरों के साथ घनिष्टता के साथ संबद्ध रहे हैं।

मंदिर से संबद्ध रहे एक पाषाण पट्ट पर उत्कीर्ण रहे संवत् १७२५ के लेख में मूलसंघ के साथ पार्श्वनाथ चैताले (चैत्यालय) लिखा था (चित्र ५)। मंदिर की भीतरी दीवार पर एक स्थान पर लिखे एक भीत्ति लेख (चित्र ६) के कुछ उल्लेखों से ज्ञात होता है कि इस मंदिर में मूलसंघ बलात्कारगण की अटेर शाखा के भट्टारक सुरेन्द्रभूषण के

शिष्य ब्र. कपूरचन्द्र के द्वारा किसी धार्मिक विधान को संपन्न करवाया गया था। भट्टारक सुरेन्द्रभूषण की विद्यमानता संवत् १७५७ से १७९१ तक मानी गई है।[१०] ज्ञात होता है कि बीसवीं सदी ई. के पूर्वार्द्ध तक यह मंदिर इस स्थान के दिगंबर जैन समुदाय का पूजा स्थल रहा। कालान्तर में नागदा नामक इस स्थान पर जैन बस्ती नहीं रहने एवं उचित देखरेख के अभाव में यह जीर्ण-शीर्ण हो गया। जीर्ण-शीर्ण हो रहे इस मंदिर का तब पद्मावती मंदिर नामकरण हो गया था। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि पार्श्वनाथ मंदिर के समीपस्थ छोटे खंडहर मंदिर में संभवत: यक्षी पद्मावती की मूर्ति विद्यमान रही थी।

जागीर आयुक्त के सन् १९७२ के एक निणर्य के अनुसार खंडहरनुमा इस मंदिर, इसके समीप के छोटे खंडहर मंदिर एवं अद्भुतजी के मंदिर को राजस्थान राज्य के देवस्थान विभाग के ऋषभदेव मंदिर की संपदा के रूप में माना गया। इस बारे में सन् १९८२ में गजट नोटीफिकेशन भी हुआ था। वर्तमान में अद्भुतजी का मंदिर जैन श्वेताम्बर समुदाय की एक संस्था के प्रबंधन के अंतर्गत है। सन् १९९९ में जैन समुदाय के दो वर्गों के प्रतिनिधियों के मध्य उक्त जीर्ण-शीर्ण पार्श्वनाथ मंदिर पर अधिकार जताने के प्रयासों को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ था। विवाद के समय पर भी मंदिर को राजस्थान राज्य के देवस्थान विभाग ने ऋषभदेव मंदिर वक्फ संपदा के रूप में माना गया। जैन तीर्थ के रूप में नागदा का महत्व दिगम्बर जैन समुदाय के लिए श्वेताम्बर जैन समुदाय से किसी भी रूप में कम नहीं रहा है। वर्तमान में सम्बन्धित जीर्ण-शीर्ण जैन मंदिर के स्थल के आसपास लोगों की बस्ती नहीं है एवं देवस्थान विभाग इत्यादि की ओर से चौकीदारी जैसी कोई व्यवस्था भी यहां नहीं है। पिछले कुछ वर्षों से उक्त महत्वपूर्ण धरोहर को असामाजिक तत्वों द्वारा निरंतर क्षति पहुचाई जा रही है। पाषाण पर उत्कीर्ण १७२५ के शिलालेख पट्ट को तोड़कर टुकड़े कर दिये गये हैं। मंदिर के सभामंडप के बीच गड्ढा खोद दिया गया है। मंदिर के खंभों को क्षतिग्रस्त किया जा रहा है, जिससे मंदिर कुछ भाग गिरने के कगार पर है। दोनों मंदिरों पर एक अन्य निजी संस्थान/ट्रस्ट ने अपना अधिकार जताने के लिए अपने क्रमांक लिख दिये हैं। मंदिर के समीप निजी सम्पति का निर्माण करवा दिया गया है। वर्तमान में उक्त मंदिर का समुचित संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है। नागदा के जैन मंदिरों में विद्यमान रहे जिन लेख इत्यादि का इतिहासवेत्ताओं एवं विद्वानों ने ऊपर लिखे अनुसार जो विवरण दिया है अब वे लेख कहां किस रूप में हैं इसकी भी कोई स्पष्ट जानकारी नहीं हो पाती है। प्रशासन एवं जैन समुदाय द्वारा सम्बन्धित जीर्ण-शीर्ण मंदिर, जो एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर है, के संरक्षण हेतु आवश्यक उपाय करने होंगे। लेखक ने कैलाशपुरी (एकलिंगजी) के समीप स्थित उक्त स्थान की राजस्थान राज्य से संबद्ध अधीक्षक, पुरातत्व एवं संग्रहालय, उदयपुर वृश्र के साथ फरवरी २०१६ में यात्रा कर उन्हें उक्त मंदिरों का अवलोकन कराया। उनसे निवेदन किया गया कि उक्त मंदिरों को पुरातात्विक धरोहर घोषित कर देवस्थान विभाग के सहयोग से इन्हें पूर्ण रूप से संरक्षित करावें। पूर्व में हमारी ओर से आयुक्त, देवस्थान विभाग उदयपुर को सन् २००८ में लिखे गये एक पत्र के द्वारा उक्त मंदिरों को दस वर्ष हेतु हमें गोद देने तथा हमें सुपुर्द करने के बारे में लिखा गया था, जिसपर उनके द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया गया। ध्यातव्य है कि चित्तौडगढ किले पर स्थित कीर्तिस्तंभ जो दिगंबर जैन परंपरा का महत्वपूर्ण स्मारक है, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित है। नागदा में उक्त मंदिर के समीप ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) से संबद्ध सास बहू नामक हिंदू परंपरा का एक मंदिर है। यदि दिगंबर जैन समुदाय द्वारा उक्त मंदिर के संरक्षण हेतु आवश्यक एवं सार्थक उपाय नहीं किये जायेंगे तो हमारी स्मृतियों से विस्मृत होती जा रही उक्त धरोहर कुछ ही वर्षों में विलुप्त प्राय: हो जायेगी।

संदर्भ सूची:

१- डॉ. विद्याधर जोहरापुरकर : तीर्थ वन्दन संग्रह, प्रका. जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर, १९६५ ई., पृष्ठ ३२।

२- वही, पृष्ठ ३९।

३- वही, पृष्ठ ५० एवं ५३।

४- ढाकी, एम. ए., "नागदा'ज एन्सिएन्ट जैन टेम्पल", संबोधी, अहमदाबाद, वॉल्युम ४ (१९७५) क्र. ३-४, पृष्ठ ८३-८५।

५- प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑफ द आर्किओलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, वेस्टर्न सर्कल, १९०५-०६, पृष्ठ ६३।

६- वही, पृष्ठ ६१।

७- डॉ. शिवप्रसाद : जैन तीर्थों का ऐतिहासिक अध्ययन, पार्श्वनाथ विद्याश्रम संस्थान, वाराणसी, सन् १९९१, पृष्ठ १८९ से १९१।

८- डॉ. विद्याधर जोहरापुरकर : भट्टारक संप्रदाय, प्रका. जैन संस्कृति संरक्षक संघ, शोलापुर, १९५८ ई., पृष्ठ ४२-४३।

९- डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन : भारतीय इतिहास एक दृश्टि भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, १९९९ ई., पृष्ठ २६९।

१०- भट्टारक संप्रदाय, पृष्ठ १३४।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व.दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

गजपंथा तीर्थ का पौराणिक महत्व (विविध ग्रंथों में)

पं.सुरेश जैन मारौरा, इंदौर

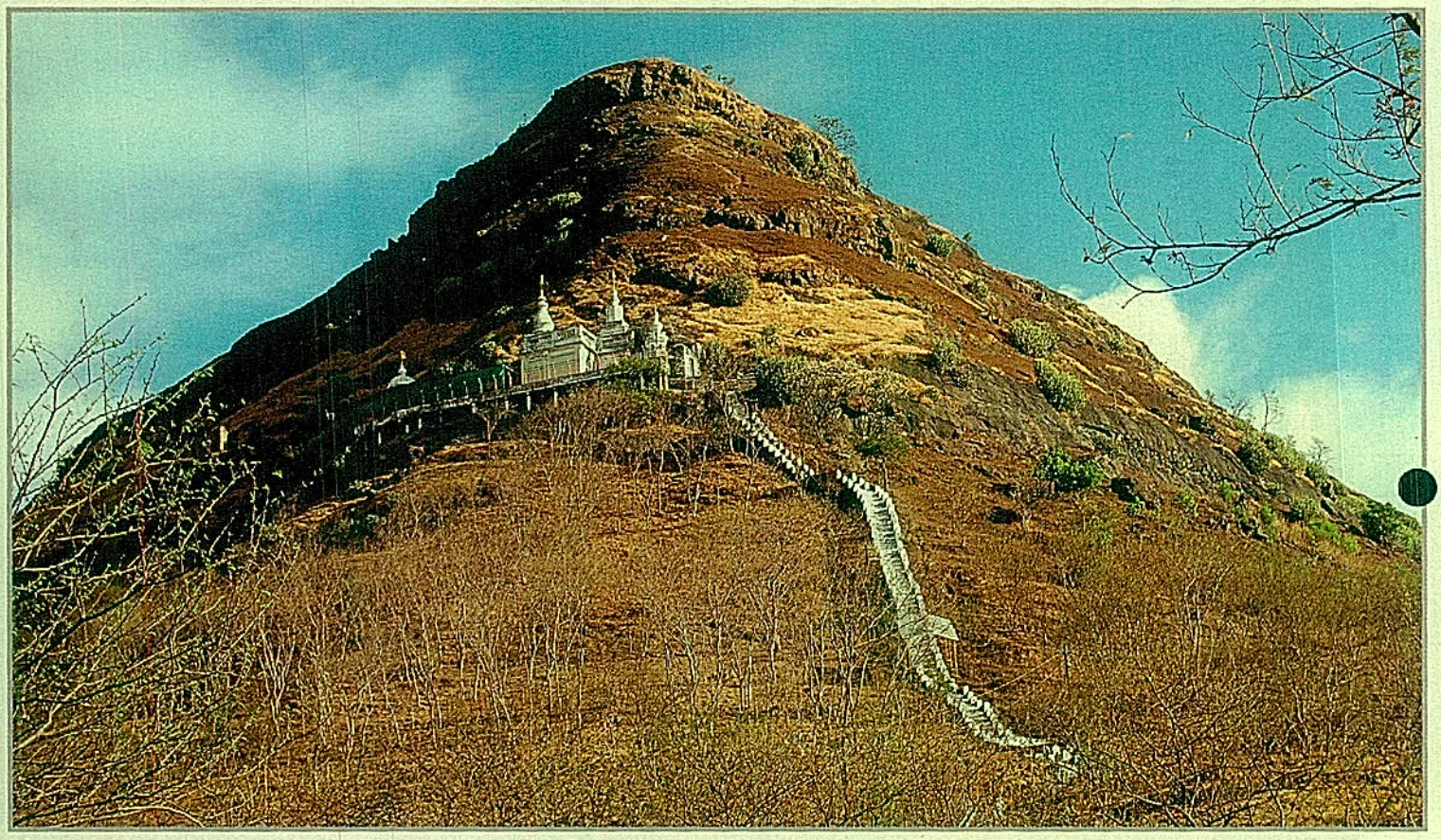

मंगलाचरण-

श्री गजपंथ शैल अति पावन, देवों द्वारा पूज्य ललाम।
यहाँ सप्त बलभद्रों ने मुनि बनकर पाया शिवपुर धाम।।
आठ कोटी मुनियों की शुभ निर्वाण भूमि सुन्दर अभिराम।
श्री मुनियों के चरण कमल में भक्ति भाव से करुं प्रणाम।।

सारांश- 1. भगवान श्रेयांसनाथ के काल से भगवान मल्लिनाथ के काल में 7 बलभद्र एवं यादव वंश के 8 करोड़ मुनियों के साथ गजकुमार मुनि गजपंथा सिद्धक्षेत्र से मोक्ष पधारे। अत: भगवान महावीर तक आयु की गणना की जावे तो 2,59,75,172 वर्ष पुराना यह क्षेत्र है।

2. वैष्णवग्रंथों के आधार पर रामचंद्र के वनवास का स्थान पंचवटी, शूपर्णखां के अपमान का स्थान भी नासिक माना जाता है। अत: रामचंद्र के काल से क्षेत्र की पवित्रता, तीर्थत्व सिद्ध होता है।

परिचय-तीर्थ का अर्थ है घाट, जहाँ तीर्थंकरों के पंच कल्याणकों में से एक भी कल्याणक होता है, वह स्थान तीर्थ माना जाता है, जिस क्षेत्र से तीर्थंकर महानयोगी, संत, साधु निर्वाण या मोक्ष की प्राप्ति कर लेते हैं, वह क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र कहलाता हैं।

गजपंथा सिद्ध क्षेत्र महाराष्ट्र प्रांत में नासिक से 7 किमी. की दूरी पर नासिक डिंडोरी रोड पर म्हसरुल नामक गाँव के पास छोटी पहाड़ी पर है। नासिक हवाई जहाज, रेल, बस किसी भी साधन से पहुँचा जा सकता है, गजपंथा क्षेत्र प्रदूषण मुक्त, रमणीय सौन्दर्य से भरपूर, शांत वातावरण के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयुक्त स्थान है। पहाड़ पर कलापूर्ण प्राचीन गुफा मंदिर है इसका नाम चामर लेणी या जैन लेणी करके प्रसिद्ध है। यह पर्यटन स्थल भी है। सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र की साधना करने वाले साधक इस क्षेत्र पर बार-बार आते हैं, यह दिगम्बर जैनों का चतुर्थकालीन पवित्र, पूजनीय, प्राचीन, पौराणिक सिद्ध क्षेत्र हैं।

दिगम्बराचार्यों द्वारा पौराणिक महत्व-

गत अवसर्पिणी के चौथे काल में निम्नानुसार नौ बलभद्रों में से सात बलभद्र तथा यादव आदि वंश के आठ कराड़ मुनिराजों के साथ श्री कृष्ण के सगे भाई देवकी के पुत्र गजकुमार मुनि यहाँ से मोक्ष गये हैं। इसलिये इस क्षेत्र का नाम गजपंथा पड़ा। ईसा की प्रथम शताब्दि में कुन्द-कुन्दाचार्य देव ने प्राकृत निर्वाण भक्ति में लिखा है कि-

सत्ते जे बलभद्रा जदुवण रिदाण अट्ठकोडिओ।
गजपंथे गिरि सिहरे णिव्वाण गया णमोतेसी।।6।।

निर्वाण काण्ड हिन्दी–**सप्त बलभद्र मुक्ति में गये,**
आठ कोडि मुनि और हु भये।

श्री गजपंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमुं तिहँ काल।।

भगवान श्रेयांसनाथ से भगवान महावीर तक आयु की गणना की जावे तो 2,59,172 वर्ष पुराना इस क्षेत्र का इतिहास है।

क्षेत्र की प्राचीनता-

यह गजपंथा पर्वत बैठे हुये गजमस्तक सम (हाथी के मस्तक समान) उन्नत शिखर वाला पर्वत है। कुछ विद्वान वर्त्तमान गजपंथ क्षेत्र को वास्तविक न मानकर आधुनिक खोज मानते हैं। क्योंकि इस क्षेत्र पर कोई प्राचीन प्रमाण नहीं हैं और न पुरातत्व है लेकिन प्राचीन साहित्य में ऐसे प्रसंग मिलते हैं जिनसे क्षेत्र की प्राचीनता सिद्ध होती है।

कर्नाटक राज्य में असग नाम के कवि राज हुये, असग कविकृत ने शांतिनाथ चरित्र में लिखा है अमित तेज और श्री विजय ने अपनी विशाल वाहिनी को लेकर अशनि वेग विद्याधर का पीछा किया, तब वह अपनी रक्षा का कोई उपाय न देखकर भाग खडा हुआ, और नाशिक्यनगर के बाहर गजध्वज पर्वत पर जा पहुँचा।

अपश्यन्न परं किंचिद्र क्षोपायम यात्मन:।

शैलं गजध्वजं प्रापन्नासिक्य नगराद् वहि:।।

इस श्लोक में कवि ने गजपंथ की जगह गजध्वज लिखा है। गजध्वज और गजपंथ एक ही पर्वत के पर्यायवाची नाम है।

आचार्य श्रुतसागरजी ने समस्त तीर्थों के नाम इस प्रकार दिये हैं-

ऊर्जयंत-शत्रुंजय-लाटदेश पावागिरि-अमीरदेशतुंगीगिरि-नाशिक्यनगरसमीपवर्ती गजध्वज-गजपंथ-सिद्धकूटं-तारापूर-कैलाशाष्टापद-चम्पापुरी, पावापुरी-वाराणसी, नगरक्षेत्र-हस्तिनागपुरन-चल-मेद्रगिरि-वेमारगिरि-रुप्यगिरि-स्वर्णगिरि-रत्नागिरि-शौर्यपूर-चूलाचूल-नर्मदातट-द्रोणगिरि-कुंथगिरि-कोटिकशिलागिरि-जम्बुकवन-चलनावदी तट-तीर्थंकर पंचकल्याण स्थानानि।

अत: नासिक्य नगर समीपवर्ती गजध्वज-गजपंथ नाम से प्राचीनता की पुष्टी होती है। निकटवर्ती अंजनगिरि क्षेत्र पर भी वैष्णव पुराण से उदधृत लेख नानुसार पाया गया है। इसकी समाधिस्थ आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी महाराज ने भी पुष्टि की है।

कुछ प्राचीन भाषा कवियों ने भी गजपंथ के बलभद्रों और यादव नरेशों की निर्वाण भूमि होने के कारण इसे सिद्ध क्षेत्र माना है, इन लेखकों में उदयकीर्ति, गुणकीर्ति, मेघराज, चिमणापंडित, दिलसुख और ज्ञानसागर मुख्य हैं।

आचार्य पूज्यपाद ने ईसा की 5वी शताब्दी में संस्कृत निर्वाण भक्ति में दण्डात्मके गजपंथे पृथुसारयस्टो कहकर गजपंथ का नमोल्लेख किया है।

प्रभाचन्द्राचार्य ने क्रियाकलाप में लिखा हैं कि-

संस्कृता: सर्वाभक्तय: पाद पूज्य स्वामिकता:।

प्राकृतास्तु कुन्द कुन्दाचार्य कृता:।

संस्कृत निर्वाण भक्ति आचार्य पूज्यपाद विरचित है पूज्यपाद स्वामी का समय ईसा की 5 वी शताब्दि सुनिश्चित है, इसी प्रकार प्राकृत निर्वाण भक्ति के रचयिता कुन्दकुन्दाचार्य माने गये है। उनका समय ईसा की प्रथम शताब्दि माना गया है। इन दोनों ही आचार्यों ने गजपंथ को निर्वाण क्षेत्र स्वीकार किया है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि प्रथम शताब्दि में भी गजपंथ निर्वाण क्षेत्र माना जाता था।

काल चक्र के प्रवास में यहाँ से निर्वाण प्राप्त आत्म साधकों के स्मारक इस क्षेत्र पर बनते आये, इसके प्रमाण पुरात्व अवशेषों से मिलते हैं। मैसूर राज्य में चामराज नाम के राजा प्रसिद्ध थे जो दिगम्बर जैन थे लगभग 1 हजार वर्ष पूर्व गुफा मंदिर चामर राजा द्वारा निर्मित कराये गये। इसलिये इनको चामर लेणे (जैन लेणे) कहा जाता है। इसी नाम से यह पहाड लोक में भी प्रसिद्ध है। दिगम्बर जैन राजाओं का इस प्रदेश में दीर्घकाल तक राज था, इनके राज्य काल में दिगम्बर जैन धर्म का विशेष प्रभाव था।

राष्ट्रकूट नरेशों ने लगभग 350 वर्षों तक दक्षिण भारत पर राज किया। राष्ट्रकूट वंश का राजा दन्तिदुर्ग ईस्वी सन् 757 वर्ष तक दक्षिण भारत का सम्राट था, उसने चित्रकूट के राजा सहप्पदेव को पराजित किया था, उसी समय सहप्पदेव के छोटे भाई वीरप्पदेव ने जिन दीक्षा ली वे ही आचार्य वीरसेन नाम से प्रसिद्ध हुये। इनके अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। उन्होंने राष्ट्रकूटों की राजधानी वाटग्राम नामक नगर के श्री चन्द्रप्रभु जिनालय तथा (नाशिक शहर के नजदीक चामर नाम की गुफाओं के परिसर में (गजपंथ सिद्ध क्षेत्रों के पहाड

क्र.	बलभद्र के नाम	कौन से तीर्थंकर के काल में मोक्ष गये	आयु वर्ष	ऊंचाई धनुष	मोक्ष स्थान
1.	विजय बलभद्र	11 वें श्रेयांसनाथ	87 लाख वर्ष	80 धनुष	गजपंथ सिद्ध क्षेत्र
2.	अचल बलभद्र	12 वें वासुपूज्य	77 लाख वर्ष	70 धनुष	गजपंथ सिद्ध क्षेत्र
3.	सुधर्म बलभद्र	13 वें विमलनाथ	67 लाख वर्ष	60 धनुष	गजपंथ सिद्ध क्षेत्र
4.	सुप्रभ बलभद्र	14 वें अनंतनाथ	37 लाख वर्ष	50 धनुष	गजपंथ सिद्ध क्षेत्र
5.	सुदर्शन बलभद्र	15 वें धर्मनाथ	17 लाख वर्ष	45 धनुष	गजपंथ सिद्ध क्षेत्र
6.	नंदी बलभद्र	18 वें अरहनाथ	67 हजार वर्ष	29 धनुष	गजपंथ सिद्ध क्षेत्र
7.	नंदीमित्र बलभद्र	19 वें मल्लिनाथ	37 हजार वर्ष	22 धनुष	गजपंथ सिद्ध
8.	रामचंद्र बलभद्र	20 वें मुनिसुव्रत	17 हजार वर्ष	16 धनुष	मांगीतुंगी सिद्ध क्षेत्र
9.	बलराम बलभद्र	21 वें नेमिनाथ	12 सौ वर्ष	10 धनुष	ब्रह्मस्वर्ग में गये

परिसर में) विद्या केन्द्र स्थापित किये थे आचार्य जिनसेन आदि आचार्य वीरसेन के प्रतिभाशाली शिष्य थे, राष्ट्रकूट नरेश अमोघ वर्ष जिनसेनाचार्य के परम भक्त थे।

मैसूर के राजा श्री चामराज उडैयार ने जबसे यहाँ की गुफाओं में मुर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा कराई, इसका उद्धार करवाया तब से इन गुफाओं को लोग चामरलेणि, चामर गुफा कहने लगे। महाराष्ट्र प्रांत में प्राइमरी कक्षा की पुस्तक में चामर लेणी के नाम से यहाँ के जैन मंदिर और गुफाओं का वर्णन मिलता है।

इस क्षेत्र की प्राचीनता अनेक तरह से सिद्ध होती है। भगवान राम के काल में पुरुषोत्तम रामचंद्र के वनवास का स्थान पंचवटी, शूपर्णखां का अपमान जहाँ हुआ वह स्थान नाशिक है। नाशिक के बाहर के निकट का क्षेत्र पर्वत गजध्वज अर्थात गजपंथ इस तरह रामचंद्र के काल से इस क्षेत्र की पवित्रता, तीर्थत्व आप सिद्ध हो जाता है।

गजपंथ गुफा से पश्चिम की ओर लगभग 16 किमी. पर त्रयम्बक रोड, पर अंजनेरी गुफा क्षेत्र है, यहाँ पर्वत पर दो गुफायें हैं एक गुफा में भगवान मल्लिनाथ की 3 फुट ऊंची पदमासन प्रतिमा पहाड़ में उत्कीर्ण है, दूसरी गुफा में 5 मूर्तियां उत्कीर्ण है, पर्वत के नीचे गाँव में 10-15 जैन मंदिर थे। उनके खण्डहर गाँव में बिखरे पड़ें है। कुछ मंदिर खण्डहर स्थिति में अभी भी दिखाई देते हैं। एक मंदिर पर 12 वीं शताब्दी का शिलालेख हैं। यहाँ की मूर्तियाँ को लोग उठो ले गये, मंदिरों पर पुरातत्व विभाग का अधिकार हैं सड़क किनारे शेड के नीचे 5 फुट ऊंची तीर्थंकर की प्रतिमा है, हिन्दु लोग अपना भगवान मानकर इसकी पूजा करते हैं, जैनों ने इसे कई बार ले जाने का प्रयास किया, किन्तु हिन्दू लोग इसे ले जाने नहीं देते।

इसी भूमि में खुदाई करते समय अनेक खंडित मूर्तियाँ तथा मंदिरों के अवशेष मिले हैं, यहाँ भी प्राचीन जिन मंदिर जीर्णोद्धार के लिये खुदाई करते समय 24 मई 1999 सोमवार को भू-गर्भ से एक हजार साल प्राचीन चौबीस तीर्थंकर भगवान का मनोज्ञ जिनबिम्ब प्राप्त हुआ। जिनमंदिर भिक्षालय नहीं शिक्षालय और विश्वविद्यालय है।

अत: ऐसे पुनीत, प्राचीन क्षेत्र का संरक्षण संवर्द्धन करके उसकी कालानुरुप प्रगति करना हमारा आद्य कर्त्तव्य हो जाता है। 125 साल पहले नागौर गद्दी के भट्टारक श्री क्षेमेन्द्र कीर्ति द्वारा जीर्णोद्धार एवं नवीन कार्य करवाकर क्षेत्र के वैभव को प्रकाश में लाया गया, इन्होंने गांव के पाटिल से कहा-मैं इस पहाडी पर जैन तीर्थ बनवाऊँगा, धर्मशाला बनवाऊँगा मुझे यहाँ जगह दे दो।

क्षेत्र पर साधु समागम-

सन् 1936 और 1950 में चारित्र चक्रतर्वी शांतिसागरजी भी यहाँ आये थे।

1966 की 1969 में समाधिसम्राट आचार्य महावीर कीर्ति जी पधारे थे।

1972 में पूज्य मुनिश्री सुधर्मसागरजी ने यहाँ समाधि ग्रहण की तबसे क्षेत्र प्रगति पर है।

1990 में गणिनी आर्यिका विजयमती माताजी का वर्षायोग हुआ।

1996 में आचार्य देवनंदजी पधारे, 250 किमी. दूर महुआ में आचार्य विद्यासागरजी, 125 किमी. दूरी पर मांगीतुंगी में आर्यिका ज्ञानमती माताजी थी इस त्रिवेणी संगम में ज्ञान की डुबकी लगाने भारत के कोने-कोने से श्रावक पधारे तब से क्षेत्र निरंतर प्रगति पर है।

प्रतिवर्ष माघ शुक्ला 14 को यहाँ वार्षिक मेला होता है। कई आश्चर्य एवं चमत्कार पूर्ण घटनाएं भी क्षेत्र से जुड़ी हैं। जैसे मुनि सुधर्मसागरजी की सल्लेखना के समय एक सर्प आया था, और महाराज के सामने 1 घंटे तक फन फैलाये बैठा रहा। जब महाराज ने पिच्छि उठाकर आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम जाओ, तब वह चला गया। समाधि के समय 9-9-1973 से 24-19-1973 तक 10-10 हजार अजैन दर्शनार्थी आते थे। 24-9-1973 को भयंकर बारिस हुई, लेकिन दहन क्षेत्र पर एक बूंद भी नहीं गिरी, यह बहुत बडा आश्चर्य था।

तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ के चतुर्थकाल से चले आ रहे गजपंथा का अस्तित्व करोडों वर्ष बाद आज भी जीवित है। यहाँ धर्मस्मारक, जिनमंदिर बनते आये हैं, पंचम काल के अंत तक बनते रहेंगे। गजपंथा सिद्धक्षेत्र की मं. महिमा के कारण ही हम सब अष्टद्रव्य से गजपंथा सिद्ध क्षेत्र की पूजन करते हैं।

तीर्थ की भाव सहित वंदना करने से अनेक भवों के कर्म कटते हैं तथा शाश्वत कल्याण होता है।

संदर्भ-

1. प्राकृत निर्वाण भक्ति कुन्द-कुन्दाचार्यदेव
2. संस्कृत निर्वाण भक्ति- आचार्य पूज्यपाद स्वामी
3. हिन्दी निर्वाण काण्ड- भैया भगवती दास
4. शांतिनाथ चरित्र-असग कविराज
5. बोधामृत गाथा 27- आचार्य श्रुतसागरजी
6. क्रियाकलाप दशभक्तयादि संग्रह टीका पृ. 61 प्रभाचन्द्राचार्य

★★★★

डा० नीलम जैन (पुणे) पुरस्कृत

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी का स्वयंभू पुरस्कार २०१५ जैन समाज की प्रख्यात विदुषी, लेखिका डा० नीलम जैन (पुणे) को प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उनकी ख्यातिलब्ध कृति " जैन लोक साहित्य में नारी " पर प्रदान किया गया, इस पुरस्कार के अन्तर्गत ३१०००रु०(इकतीस हजार) की राशि, प्रशस्ति पत्र, शाल आदि प्रदान किया जाता है। डा० नीलम जैन को यह पुरस्कार श्री महेन्द्रकुमार जी पाटनी, श्री सुधांशु जी कासलीवाल एवं श्री एन० के० सेठी ने श्री महावीर जी (राज०) में आयाजित विशाल धर्मसभा के मध्य प्रदान किया। उल्लेखनीय है डा० नीलम जैन इससे पूर्व शताधिक राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है।

डा० ममता जैन, पुणे

तीर्थ मित्र बनें और जैन तीर्थों की गतिविधियों का अध्ययन करें

– सुरेश जैन (आई.ए.एस.)
अध्यक्ष, जैन तीर्थ, नैनागिरि
30, निशात कालोनी, भोपाल 462003

हमारे विद्वान, यात्री और दर्शक अपने तीर्थों के दर्शन करते हैं। तीर्थों पर जाकर अभिषेक और पूजन करते हैं। ऐसे सभी व्यक्तियों से आग्रह है कि तीर्थमित्र के रूप में उत्साह और रूचि पूर्वक वे किसी मंदिर, कार्यालय, भोजनालय और बगीचे में घूमते हुए तथा अपनी बस और कार में बैठते हुए यात्रियों से तीर्थ के संबंध में कुछ प्रश्न करें। उनके उत्तर नोट करें। सामान्य यात्री की भांति थोड़ी देर के लिए बैठ जाएं। किचिन, स्नानघर, मूत्रालय और शौचालय जैसी जनसुविधाओं का अवश्य अध्ययन करें। प्रत्येक स्थान की गतिविधियों को ध्यान से देखें। अन्य यात्रियों से चर्चा करें। उनकी आवश्यकताओं और अनुभवों की जानकारी लें। तीर्थ की सुविधाओं पर उनके संतोष, असंतोष पर प्रश्न करें। अपनी डायरी में नोट करें। अपने लेपटाप या पॉमटाप पर नोट करें। इस जानकारी को पिछली जानकारी के साथ समेकित करें। तीर्थ पर होने वाले वार्षिक समारोह जैसे मेला, विधान, पारस और महावीर निर्वाण महोत्सव के अवसरों पर विशेष अध्ययन करें। बारीक और विस्तृत जानकारी एकत्रित करें। यथा संभव इस जानकारी को व्यापक और परिपूर्ण बनाएं।

2. तीर्थ मित्रों से निवेदन है कि वे कुछ अलग प्रकार से तीर्थों के लाभ के लिए उपयोगी कार्य करें। तीर्थ यात्रा पर जाने के लिए नए–नए अवसरों का सदुपयोग करें।

3. तीर्थ मित्र बंधुओं से आग्रह है कि प्राप्त जानकारी संबंधित तीर्थ के अध्यक्ष और मंत्री को भेजें। इस जानकारी के आधार पर तीर्थों के सुधार के लिए सुझाव भेजें। तीर्थ मित्रों द्वारा एकत्रित यह जानकारी प्रबंधन के लिए बड़ी उपयोगी होती है। अतः तीर्थ के पदाधिकारी उनसे प्राप्त जानकारी के लिए उन्हें धन्यवाद पत्र भेजें। उनकी जानकारी के आधार पर तीर्थों के कार्यों में सुधार करें। पदाधिकारियों से आग्रह है कि वे तीर्थ मित्रों को तीर्थ पर रहने और भोजन की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध कराएं। प्रबंध समिति की बैठक में उन्हें ससम्मान आमंत्रित करें।

4. सामान्यतः प्रत्येक तीर्थ तथा विशेषतः नैनागिरि तीर्थ के वर्तमान एवं भूतकालीन पदाधिकारियों, समिति के सदस्यों एवं तीर्थ के प्रति श्रद्धा रखने वाले सभी व्यक्तियों से विनम्र आग्रह है कि वे ऊपर लिखे अनुसार जानकारी एकत्रित करें, संबंधितों को प्रेषित करें तथा देश के सभी तीर्थों के चतुर्मुखी विकास में अपना योगदान देकर जैन संस्कृति का व्यापक प्रचार और प्रसार करें।

5. तीर्थ मित्र यात्रियों को समझाएं और उन्हें आश्वस्त करें कि तीर्थयात्रा करने से व्यक्ति द्वारा किए गए पाप और पापजनित संताप समाप्त हो जाते हैं। गलत काम से चित्त में उत्पन्न बैचेनी, चिड़चिड़ापन, थकान और अज्ञात भय समाप्त हो जाता है। तीर्थ के दर्शन कर प्रत्येक यात्री अपने और अपने परिवार के कल्याण में सहभागी बन जाता है। तीर्थों पर प्रतिभाशाली व्यक्तियों से भेंट होती है। इससे हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है।

6. तीर्थ मित्र श्रद्धालुओं को यह भी बताएं कि प्रत्येक तीर्थ के प्रायः सभी सहायक अपना काम बिना किसी निगरानी के कर्मठता पूर्वक करते हैं। वे बेकार घूमते और इधर–उधर मंडराने में अपने समय का अपव्यय नहीं करते हैं। सदैव अपने समय का सदुपयोग करते हैं। यात्रियों का विशेष ध्यान रखते हैं। यात्रियों को समुचित मूल्य पर श्रेष्ठ गुणवत्ता की वस्तुएं उपलब्ध कराते हैं। यात्रियों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे तीर्थ के सहायकों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करें। अपने तन, मन और तीर्थस्थल की स्वच्छता बनाए रखें। तीर्थ पर लापरवाही से कचरा न बिखेरें। तीर्थ की पवित्रता का पूरा ध्यान रखें।

7. तीर्थ मित्र यह सुनिश्चित करे कि हमारे पदाधिकारी और सहायक एक–दूसरे को सम्मान दें। स्नेह दें। वर्तमान जगत में उपभोक्तावादी संस्कृति विकसित होती जा रही है। पदाधिकारियों में सहायकों का और सहायकों में पदाधिकारियों का तात्कालिक सहयोग लेकर उनका उपयोग करने की प्रवृत्ति प्रबल होती जा रही है। दोनों के बीच पारस्परिक कृतज्ञता का भाव घटता जा रहा है। धैर्यपूर्वक एक पक्ष के अवदान को दूसरे पक्ष द्वारा गहराई से समझने की प्रवृत्ति घटती जा रही है। कृतज्ञता के सहारे समाज के सभी पक्ष आपस में एक–दूसरे से जुड़े रहते हैं। जब किसी क्षेत्र का अध्यक्ष या मंत्री अपने सहायको–प्रबंधक, पुजारी और माली आदि – के कार्य को अच्छी तरह से समझकर उसके प्रति कृतज्ञता की भावना प्रदर्शित करेगा तो वह सहायक उनकी इस भावना से ऊर्जा प्राप्त करेगा। अपना कार्य अधिक सजगता पूर्वक और बेहतर ढंग से करेगा। अतः यह आवश्यक है कि तीर्थों के सभी पदाधिकारी और सहायक एक–दूसरे के कार्यों को छोटा न करें। छोटा न समझे। दोनों पक्ष एक दूसरे के कार्यों को समझने का प्रयास करें और एक दूसरे के प्रति कृतज्ञता बोध विकसित करें। आपस में जुड़े रहें तथा पारस्परिक विश्वास के साथ मिल–जुलकर तीर्थों का चतुर्मुखी विकास करते रहें।

8. भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई की अध्यक्षा आदरणीय सरिता जी एवं महामंत्री श्री संतोष पेंढारी से विशेष आग्रह है कि वे कुशल एवं सक्षम तीर्थ मित्रों और उनके अवदान की जैन तीर्थवंदना के माध्यम से सराहना करें। उन्हें नई पहचान दें। उनकी भूमिका को सम्मान दें।

म. प्र एवं छत्तीसगढ़ महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति का हुआ सम्मेलन

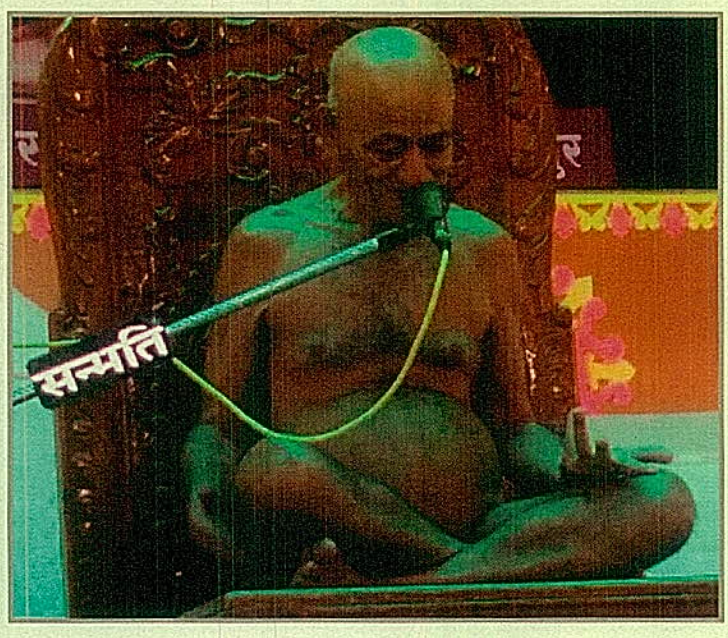

कुण्डलपुर:- कुण्डलपुर में आगामी 4 से 9 जून को आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के मंगल सान्निध्य में होने जा रहे महामस्तकाभिषेक महोत्सव हेतु म. प्र. एवं छत्तीसगढ के प्रत्येक जिले एवं तहसील के प्रतिनिधियों का सम्मेलन कुण्डलपुर के विद्याभवन में आयोजित किया गया।

इसके पूर्व कार्यक्रम के आरम्भ में बडे बाबा एवं आचार्य ज्ञानसागर जी के चित्र का अनारवरण किया गया। इस अवसर पर म. प्र. और छ. ग. के प्रतिनिधियों ने महोत्सव में अपने नगर और गांव में सहभागिता का संकल्प व्यक्त किया। इस मौके पर अखिल भारतीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी के पूर्व अध्यक्ष सुधीर सिंघई, सुशीला पाटनी, इन्दू जैन मुम्बई, डॉ. सुधा मलैया, विमल लहरी, मुकेश ढाना, चन्द्रकांत (छ.ग.) आदि ने अपने उदगार व्यक्त किये।

इसके पश्चात् आचार्य श्री महाराज ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि बड़े बाबा का दरबार सर्वोच्च न्यायालय है यहां कोई बच नहीं सकता। भावों का खेल है द्रव्य का नहीं। धन साथ नहीं जायेगा। भावों के द्वारा निर्धन व्यक्ति भी बड़ा हो जाता है, धार्मिक अनुष्ठान में बड़ों को आगे करते हैं। किन्तु धार्मिक क्षेत्र में बड़ा और छोटा कोई नहीं होता। भाग्योदय तीर्थ सागर में एक बुढ़िया मेरे समीप एक थैला चना लेकर आई और उसने चना दान करने की भावना रखी। दान छोटा बड़ा नही होता भावना बड़ी होती है। इस तरह दान का मोल नही है। बड़े बाबा के दरबार में अधिकार की नहीं सेवा की बात है। वीतराग मार्ग पर चलना अहो भाग्य है। भावों के माध्यम से अपने आप को ऊपर उठाइये बड़े बाबा के दरबार में जो दान देकर खाली होता जाता है वह ऊपर उठता जाता है। जो पैसे वाले होते हैं वे सिर्फ दवाईयों का स्वाद ही ले पाते है और गम खाते रहते हैं। धार्मिक अनुष्ठान करते रहना चाहिये। धर्म अनुपम सुख देना वाला है आचार्य श्री ने आगे कहा कि महोत्सव में गर्मी जरुर होगी किन्तु अभिषेक हेतु क्षीर सागर का जल शीतल होता है। बड़े बाबा के दरबार में वीतराग वैभव है। यहां माँगा नहीं जाता अपने आप आता है। बड़े बाबा को शिखर पर विराजमान करना हमारा अहो भाग्य है जो दिन का सपना था वह साकार हो रहा है। बड़े बाबा की प्रतिमा अतिप्रचीन है इसे सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। आचार्य श्री ने कहा कि परिवार के प्रत्येक सदस्य को महोत्सव में अपनी भागीदारी करना चाहिये यहां तक कि जो अजन्मा है। माँ के पेट में है उसके नाम से भी कलश लिया जा सकता है। यह बालक का पुण्य है। धर्म कार्य में उदारता का परिचय देना चाहिये इस तरह धर्ममय वातावरण बनाते रहना चाहिए। क्योंकि भविष्य अनिश्चित है।

★★★★

हार्दिक अभिनन्दन एवं बधाई

11 मई 2016 को श्रवणबेलगोला में सम्पन्न हुई बैठक में महामस्तकाभिषेक महोत्सव 2018 के लिये इन्जिनियर श्री श्रीपाल जी गंगवाल, गेवराई को त्यागी-व्रती सेवा समिति का अध्यक्ष चुना गया। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं अभिनन्दन

★★★★

भगवान महावीर जन्मभूमि में महावीर जयन्ती के अवसर पर बिहार के महामहिम राज्यपाल द्वारा मानस्तम्भ का ऐतिहासिक शिलान्यास सम्पन्न

20 अप्रैल, 2016, वासोकुण्ड, वैशाली, बिहार भगवान महावीर जन्मभूमि वासोकुण्ड, वैशाली में महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर मन्दिरजी में पधारे महामहिम राज्यपाल रामनाथ कोविंद जी ने कहा- पंचशील के जिन पाँच सिद्धांतों को जैनधर्म के 24 वे तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने प्रतिपादित किया वो आज भी इस वैज्ञानिक युग में प्रासंगिक है। जैनधर्म जीने की कला है। इसके सिद्धान्त बडे ही वैज्ञानिक और व्यावहारिक है। जैन समाज के विचार से एक आदर्श समाज और राष्ट्र की परिकल्पना संभव है। जैन सिद्धान्त को अपना कर पूरे विश्व में आतंकवाद और पर्यायवरण जैसे गंभीर समस्या को दूर किया जा सकता है। यह गौरव की बात है कि बिहार के प्राचीन वैशाली के वासोकुण्ड गाँव में भगवान महावीर स्वामी का जन्म हुआ। जहाँ प्राचीन, प्रजातंत्र स्थापित था, यहाँ सुदृढ और सुसंगठित शासन व्यवस्था थी, जिससे आज भी हमें प्रेरणा मिलती है। गौरव की बात है कि वैशाली विश्व में प्रथम प्रजातंत्र की जननी है। आज भगवान महावीर की जन्मभूमि पर परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की प्रेरणा से विश्व के अनोखे जैन मन्दिर का निर्माण हुआ है यह प्रदेशवासियों के लिए गौरव की बात है। यह महज संयोग ही है कि देश के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जी ने 20 अप्रैल, 1956 को भगवान महावीर जन्मभूमि परिसर में आधारशिला रखी थी और आज मुझे भी इसी दिन मानस्तम्भ की आधारशिला रखने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

राज्यपाल महोदय ने गर्भगृह में स्थापित भगवान महावीर की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित किया। एवं पूजा अर्चना कर आरती की। अंत में राज्यपाल महोदय ने मानस्तम्भ की आधारशिला के अनावरण के साथ परिसर में आम के पौधे का भी रोपण किया। इस अवसर पर भगवान महावीर स्मारक समिति के द्वारा शॉल व भगवान महावीर की मूर्ति राज्यपाल महोदय को भेंट कर उनका सम्मान किया गया।

इस समारोह में डीएम धर्मेन्द्र, एसएसी विवेक कुमार, डीएसपी अजय कुमार, एसडीपीओ मदन कुमार आनंद, प्रशिक्षु डीएसपी अभिजीत कुमार के अलावा कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। सभा को वैशाली के जिला व सत्र न्यायाधीश ए.के.जैन, वैशाली विधायक राज किशोर सिंह, भगवान महावीर स्मारक समिति के अर्थव्यवस्था श्री सतीश चन्द जैन ने मंदिरजी की भावी योजनाओं से सभा को अवगत कराया।

वासोकुण्ड के प्राकृत जैन शास्त्र व अहिंसा शोध संस्थान में आयोजित व्याख्यानमाला में सुख शांति हेतु परिग्रह परिणाम आवश्यक विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि- जिला एवं सत्र न्यायाधीश ए.के.जैन ने कहा- आज समाज में परिग्रह को सीमित करने की आवश्यकता है। श्यामनारायण चौधरी ने बताया- विश्व में झगडे फसाद हो रहे हैं वे परिग्रह व धन संचय का कारण है। प्रो. वीरसागर जैन, दिल्ली ने कहा- भगवान महावीर ने लोक जनकल्याणकारी मांग को अपनाने पर जोर दिया। इसी अवसर पर अखिल बंसल जयपुर, डॉ. कुलदीप दिल्ली, प्रो. प्रफुल्ल नवल किशोर श्रीवास्तव हाजीपुर, प्रो. दामोदर सिंह वैशाली भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन व धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के निदेशक डॉ. ऋषभ चंद जैन ने किया।

महावीर जयन्ती के अवसर पर देश भर से जुडे जैन अनुयाइयों ने उनके जन्मस्थान वासोकुण्ड में विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। जो बावन पोखर से गाजे-बाजे के साथ बैलगाडियों में विभिन्न ग्रामों से होकर वासोकुण्ड पहुँची। वहाँ पर भगवान महावीर की प्रतिमा का अभिषेक, पूजा-अर्चना की गई। शोभा यात्रा में हजारों की संख्या में ग्रामीण ने भाग लिया।

भगवान महावीर की जन्मभूमि, गौतम बुद्ध की कर्मभूमि, आम्रपाली की रंगभूमि और विश्व में प्रथम लोकतंत्र की जननी वैशाली पर दिनांक 19-21 अप्रैल, 2016 को त्रिदिवसीय वैशाली महोत्सव आरम्भ हुआ। महोत्सव का उद्घाटन बिहार के पर्यटन मंत्री ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने कहा कि मुझे बेटी होने पर गर्भ है। महोत्सव की अध्यक्षता करते हुए कला संस्कृति, खेल एवं युवा मामलों के मंत्री शिवचन्द्र ने कहा- भगवान महावीर ओर गौतम बुद्ध के कारण वैशाली की पहचान अंतगर्राष्ट्रीय स्तर पर हुई है। वैशाली महोत्सव की शाम को डी.एम. रचना पाटिल ने मंच पर चारों ओर जल छिडकर कर कलश स्थापित किया।

वैशाली महोत्सव जिले की सांस्कृतिक विरासत, वैभवशाली परम्परा व विश्व के प्रथम उद्घोषित गणतंत्र को याद करने का दिन है। पर्यटकों से लेकर आम लोगों की उमडती भीड महोत्सव व वैशाली के महत्व की दास्तां कह रही है। इस अवसर पर जिला प्रशासन ने पूरी तैयारी की थी। चैत गायन ने महोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर यादगार बना दिया। पद्मभूषण पं. हरिप्रसाद चौरसिया की बांसुरी की धुन पर लोग मुग्ध थे। पद्मश्री देवयानी द्वारा प्रस्तुत भरत नाट्यम बरबस ही राज नर्तकी आम्रपाली की याद करा रही थी। ओडिसा के डांस ग्रुप द्वारा प्रस्तुत सामुहिक नृत्य कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये।

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड द्वारा सम्मानित

जिनवाणी संरक्षण का अभूतपूर्व कार्य

मैंने कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ का गत फरवरी माह में दो बार अवलोकन किया यहां देश एवं प्रदेश के सदूरवर्ती अंचलों में स्थित व्यक्तिगत एवं संस्थागत पाण्डुलिपियों के संग्रहों के सूचीकरण एवं संरक्षण का जो अनुपम कार्य किया गया है वह प्रशंसनीय है। यहां पर मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि के भंडारों में सम्मिलित 1, 32, 732 पाण्डुलिपियों का 07 मार्च 2016 तक सूचीकरण किया जा चुका है। इससे इनमें निहित ज्ञान के माध्यम से शोध के नये क्षितिज खुलेंगे। इस हेतु ज्ञानपीठ के सभी प्रबंधकों विशेषत: डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल, अध्यक्ष एवं डॉ. अनुपम जैन, कार्यकारी निदेशक को बधाई देता हूँ।

उक्त विचार गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के नेशनल हेड डॉ. मनीष विश्नोई ने कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के पाण्डुलिपि सूचीपत्रों के सबसे बडे निजी संकलन हेतु प्रमाण पत्र के प्रस्तुतीकरण के अवसर पर 02.04.2016 को व्यक्त किये।

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इन्दौर द्वारा 1993 से अब तक किये गये कार्य और उपलब्धियों का विस्तृत परिचय संस्था सचिव डॉ. अनुपम जैन द्वारा दिया गया एवं राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के साथ मिलकर किये जा रहे पाण्डुलिपि सूचीकरणे के बारे में कहा एवं बताया कि संरक्षण कार्य के मध्य उन्हें लगभग 500 अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं। इनमें से अधिकांश जैन भण्डारों से मिली है।

आभार प्रदर्शन करते हुए डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल ने व की यह मेरे पूर्वजों द्वारा बोये गये बीज का सम्मान है। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ मर पूज्य पिताजी श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल जी की दूरदृष्टि का प्रतिफल है। उन्होंने सभी सभागतजनों विशेषत: डॉ. मनीष विश्नोई का आभार माना।

कार्यक्रम में प्रो. नरेन्द्र धाकड प्रो. जे.सी. उपाध्याय श्री सूरजमल बोबरा, डॉ. रजनी जैन, डॉ. समता जैन, डॉ. सुरेखा मिश्रा, रमेश श्री कासलीवाल, श्री बाहुबली पाण्डया, श्री सुमत प्रकाश जैन, श्री राजीव रतन जैन, श्री सुदर्शन जैन आदि उपस्थित रहे।

- डॉ. अनुपम जैन

अल्पसंख्यक अब दे सकेंगे सेल्फ अटेस्ट सर्टिफिकेट

सरकार ने सेल्फअटेस्टेड प्रमाणपत्र स्वीकार करने के बाद अब अल्पसंख्यक प्रमाणपत्र की अनिवार्यता हटा दी है। सरकारी योजनाओं का फायदा लेने के लिए अब यह प्रमाण पत्र जरुरी नहीं होगा। यानी लोगों को अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र के लिए सरकारी दफ्तरों के चक्कर नहीं लगाने पडेंगे। सरकार ने साफ कर दिया है कि इसके लिए स्व-प्रमणित करना ही पर्याप्त है। अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय की ओर से चलाई जा रही योजनाओं का लाभ लेने के लिए अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र अनिवार्य नहीं है। मंत्रालय ने अल्पसंख्यक समुदायों खासकर जैन समुदाय से शिकायत मिलने के बाद ये फैसला लिया। सरकार ने मुस्लिम, ईसाई सिख, बौद्ध, पारसी और जैन समुदाय को अल्पसंख्यक के तौर के पर अधिसूचित किया है।

श्री सन्मती सेवादल द्वारा आयोजित धर्मनगरी करमाला में भगवान महावीर जन्म जयंती महोत्सव का दीपप्रज्वलन करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता जैन एवं अन्य पदाधिकारीगण

मांगीतुंगी में (महा.) में श्री ज्ञानमती माताजी का आर्यिका दीक्षा षष्ठिपूर्ति महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 61 वां आर्यिका दीक्षा दिवस विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न किया गया। जिसमें प्रात: ऋषभगिरि स्थित भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उँची उत्तुंग प्रतिमा पंचामृत महामस्तकाभिषेक के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें 35 लोगों ने रजत झारी से भगवान के मस्तक पर महाशांतिधारा सम्पन्न की। मध्याह में पाण्डाल में सप्तम पट्टाचार्य आचार्य श्री अनेकांतसागर जी व ऐलाचार्य श्री निजानंद सागर जी सहित चतुर्विध संघ के पावन सान्निध्य में आर्यिका दीक्षा षष्ठीपूर्ति कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न किया गया। जिसमें आचार्य श्री शांतिसागर जी की व पूज्य माताजी की महापूजा सम्पन्न की गई जिसमें एक-एक द्रव्य को सुन्दरता के साथ थाली में सजाकर के माताजी के चरणों में समर्पित किया गया एवं 61 लोगों ने अर्ध्य का थाल समर्पित किया। इसी क्रम में आचार्यश्री अनेकांत सागर जी ने पूज्य माताजी को नवीन पिच्छी प्रदान की एवं सिद्धान्त रत्नाकर की उपाधि से पूज्य माताजी को अलंकृत किया व प्रशस्ति प्रदान की। माताजी के कार्यकलापों की सराहाना करते हुए रत्नवृष्टि एवं पुष्पवृष्टि की, व शास्त्र प्रदान किया व ऐलाचार्य श्री निजानंद सागर जी महाराज ने पूज्य माताजी को इस संयम दिवस के महान अवसर पर शास्त्र भेट किया। पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के कुशल नेतृत्व में कार्यक्रम सम्पन्न किया गया एवं आने वाले सभी महानुभावों की आवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई।

आज से 60 वर्ष पूर्व क्षुल्लिका श्री वीरमती माताजी को राजस्थान के माधोराजपुरा (जयपुर) ग्राम में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के प्रथम पट्टाचार्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज ने आर्यिका दीक्षा के संस्कार देकर ज्ञानमती नाम रखा एवं पूज्य माताजी से कहा कि अपने नाम का ध्यान रखते हुए चारित्र और ज्ञान की सदैव वृद्धि करो, यथा नाम तथा गुण के अनुसार दिन प्रतिदिन ज्ञान की वृद्धि करते हुए आज लगभग 400 से ज्यादा ग्रंथों का लेखन पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा किया जा चुका है। दो बार डी.लिट्. की उपाधि से अलंकृत पूज्य माताजी आज सारे देश में सरस्वती के रुप में ही प्रख्यात हैं। तीर्थ विकास के क्रम में तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उँची महाजिनबिम्ब का निर्माण करवा करके सारे विश्व में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

समिति के मंत्री श्री विजय कुमार जैन ने बताया कि समारोह में उपस्थित डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर ने पूज्य माताजी के जीवन पर एक पुस्तिका का सृजन किया। इस भव्य एवं

ज्ञानवर्धक पुस्तिका का विमोचन श्री प्रमोद कासलीवाल, डॉ. पन्नालाल पापडीवाल ने किया। इसी क्रम में उपस्थित लोगों ने पूज्य माताजी के चरणों में विनयांजलि प्रस्तुत की जिसमें प्रो. डी.ए. पाटिल (सांगली), डॉ. अनुपम जैन (इन्दौर), श्रीमती मनोरमा महेशचंद्र जैन (विकासपुरी-नई दिल्ली), पायल जैन (हैदराबाद), सौ. स्वर्णा पाटनी (नासिक) आदि इस अवसर पर पूज्य माताजी को पिच्छिका प्रदान करने का सौभाग्य श्रीमती सुजाता निरंजन शाह (पूना) ने प्राप्त किया। इसी क्रम में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने कार्यक्रम का कुशल निर्देशन किया, कार्यक्रम में आर्यिका सुभूषणमती माताजी, आर्यिका सुदर्शनमती माताजी, आर्यिका सुदृष्टिमती माताजी, आर्यिका पावनश्री माताजी, एवं समस्त आर्यिका संघ का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस संयम दिवस के पावन अवसर पर स्थानीय बालिकाओं के द्वारा सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का संचालन श्री विजय कुमार जैन एवं जीवन प्रकाश जैन ने किया।

विजय कुमार जैन
राष्ट्रीय मंत्री-मांगीतुंगी महोत्सव समिति

व्यक्तित्व निर्माण का दुष्कर कार्य कर रहे है आचार्य ज्ञानसागरजी -केन्द्रीय मन्त्री नरेन्द्रसिंह तोमर

आचार्य ज्ञानसागरजी का २८ वाँ दीक्षा समारोह ग्वालियर में सम्पन्न

सराकोद्वारक तपोनिधि आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज का २८ वाँ दिगम्बरी दीक्षा समारोह १९ अप्रेल महावीर जयंती के अवसर पर सकल दिगम्बर जैन समाज ग्वालियर द्वारा चम्पाबाग बगीची नई सड़क लश्कर में उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर भारत सरकार में केन्द्रीय इस्पात एवं खनिज मंत्री नरेन्द्रसिंह तोमर व मुरैना सांसद पूर्व मंत्री अनूप मिश्रा सहित देषभर के गुरूभक्त सम्मिलित हुए व आचार्यश्री का आशीर्वाद प्राप्त कर उनके चरणों में अपनी विनयांजलि समर्पित की।

समारोह के मुख्य अतिथि नरेन्द्रसिंह तोमर ने कहा कि भारत सरकार की ओर से मैं आचार्यश्री के चरणों में नमन करता हूँ व आप सभी को भगवान महावीर जयंती व आचार्यश्री की दीक्षा जयंती की शुभकामनाएँ देता हूं। जिस दिन भगवान महावीर का जन्म हुआ, उस दिन शुभ नक्षत्र में आचार्य ज्ञानसागरजी द्वारा दीक्षा लेना ही संत की ऊँचाई का ज्ञान कराता है। आचार्य ज्ञानसागरजी विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिभाओं को एकत्रित कर उनके व्यक्तित्व निर्माण का कार्य करते है उन्हें सन्मार्ग के संस्कार प्रदान करते है यह आज के युग में दुष्कर कार्य है। ज्ञानसागरजी द्वारा संस्कारित व्यक्ति या विद्यार्थी जिस क्षेत्र में जायेगें वे कीर्तिमान स्थापित करेगें क्योंकि भगवान महावीर व आचार्य ज्ञानसागरजी का चित्र जिसके समक्ष हो वह गलत कार्य कर ही नहीं सकता है। चम्बल के बीहड़ में जहाँ के दस्यु प्रसिद्ध है वही क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल व आचार्य ज्ञानसागरजी जैसे व्यक्तित्व से मुरैना भी प्रसिद्ध हुआ है। आचार्यश्री से आशीष अनुकम्पा की कामना करते हुए श्री तोमर ने कहा कि ऐसा आशीर्वाद दे की हम अपना कार्य ईमानदारी से कर सकें।

जो आत्मज्ञान की गंगा में नहा रहा हो उसे आडम्बर की क्या आवश्यकता - अनूप मिश्रा

इस अवसर पर पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी के भांजे व मुरैना सांसद अनूप मिश्रा ने कहा कि उन्हौंने सिरोंज की जैन पाठशाला में अध्ययन किया है वे जानते है कि जैन साधु सही मायने में मुनि होते है। जैन एक जीवन पद्धति है वैज्ञानिक है। णमोकार मंत्र जीवन की दिशा बदलने का कार्य करता है। जैनधर्म एक ऐसा धर्म है जहाँ जाति-पाति, पंक्ति भेद, वर्ण भेद नहीं है। समाजवाद की सच्ची परिकल्पना जैनधर्म मे है। जैन मुनि अध्यात्म का साक्षात रूप है जो आत्मज्ञान की गंगा में निरंतर नहा रहे होते है। उन्हें आडम्बर की क्या आवश्यकता है। श्री मिश्रा ने आचार्य ज्ञानसागरजी के प्रति अपनी विनयांजलि में कहा कि आचार्यश्री के चरणों में प्रणाम करने का अवसर न चूकें, वे व्यक्तित्व में देवत्व प्रदान करने का कार्य करते है।

वृद्धों की सेवा कीजिए - बिना मेडिसीन स्वास्थ्य लाभ लीजिए - आ. ज्ञानसागरजी

विशाल जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए आचार्यश्री ज्ञानसागर महाराज ने भगवान महावीर के सिद्धांतों को जीवन में उतारने का आह्वान करते हुए कहा कि बर्थ डे होटल में नहीं मंदिर में मनाए, केक काटे नही, लड्डू बाटें, मोमबत्ती प्रदूषण फैलाती है घी का दीपक जलाए। पुत्र व पुत्रवधू अपनी सास की सेवा करें। वृद्धों की सेवा करे और बिना मेडिसीन स्वास्थ्य लाभ ले, यही महावीर जयंती का संन्देश है।

दोनों नेताओं के वक्तव्य की सराहना करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि राजनीति में रहकर सत्य बोलना, स्पष्ट बोलना मुश्किल कार्य है। आध्यात्मिकता हमें कर्तव्यनिष्ठा सिखाती है। आचार्यश्री ने केन्द्रीय मंत्रीजी से कहा कि वे चाहते है कि पूरी ग्वालियर कमिश्नरी व्यसन से मुक्त हो इसका प्रयास करना चाहिये। आज सभी अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर बनाने का कार्य करते है लेकिन अच्छा इंसान बनाने का कार्य करना चाहिये।

इस अवसर पर आचार्यश्री के दीक्षा जयंती के उपलक्ष्य में श्रद्धालुओं ने उनका अष्टद्रव्य से पूजन व २८ आरती, २८ शास्त्र, २८ कलशों से पाद प्रक्षालन किया।

मंच पर ग्वालियर नगर के वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. वीरेन्द्र गंगवाल, भाजपा ग्रामीण जिलाध्यक्ष वीरेन्द्र चैधरी, इंजीनियर पारस जैन आदि उपस्थित थे। स्वागत भाषण महावीर जयंती के संयोजक रतन अजमेरा व विनयांजलि डॉ. वीरेन्द्र गंगवाल, संजय जैन दिल्ली, योगेश जैन खतौली आदि ने व्यक्त की। आबकारी आयुक्त आर.के. जैन (आई.ए.एस.) व शिवपुरी एस.डी.एम. राजीव जैन सहित दिल्ली, मेरठ, गजियाबाद, मुरैना, बड़ौत, सूरत, बैंगलोर, आगरा, बबीना, चन्देरी, सूर्यनगर सहित अनेक स्थानों से श्रद्धालुओं ने आशीर्वाद ग्रहण किया।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर'
२१७, सोलंकी कालोनी, सनावद
९४०७४९२५७७

आचार्य वर्धमानसागरजी के सान्निध्य में

राजस्थान में अभूतपूर्व पंचकल्याणक व धर्मप्रभावना

श्रवणबोलगोला महामस्तकाभिषेक के निमित्त हो रहा है विहार

सुनावद। पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि, राष्ट्रगौरव आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ (३८ पिच्छी) का पद विहार भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोला फरवरी २०१८ के निमित्त निरंतर चल रहा है। आचार्य संघ जहाँ भी पहुँच रहा है वहाँ संघ अपनी चर्या-चर्चा के साम्य के माध्यम से संदेश प्रदान कर श्रद्धालुओं को अपने से जोड़कर समाज में समन्वय का संदेश प्रस्तुत कर रहे है।

पूर्वाचार्य धर्मसागरजी की जन्मस्थली में आचार्य संघ

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की पट्ट परम्परा के तृतीय पट्टाधीश आचार्य धर्मसागरजी महाराज की जन्मस्थली गंभीरा में पहुँचे। आचार्य धर्मसागरजी ने ही आचार्य वर्धमानसागरजी को मुनि दीक्षा प्रदान की थी। आचार्य संघ के सान्निध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजन सम्पन्न हुआ। ११ हाथी, ७ घोड़े, ४ बग्गी, बैंडबाजों के साथ भव्य जुलूस निकला। आचार्य संघ के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमा नवीन बेदी में विराजमान की गई। इस अवसर पर बैंगलोर, दिल्ली, कोटा, बूंदी, टोंक, सवाई माधोपुर, पलाई, उनिया, नैनबा, देई सहित अनेक स्थानों के श्रद्धालु सम्मिलित हुए।

४५ वर्ष बाद टोंक पहुँचे आचार्यश्री

१ अप्रेल को राजस्थान की धर्मनगरी टोंक में आचार्य संघ के सान्निध्य में युगप्रवर्तक भगवान आदिनाथजी की जन्म जयन्ती मनाई गई। ४५ वर्ष बाद पहुँचे आचार्यश्री ने आचार्य धर्मसागरजी के साथ आगमन के संस्मरण सुनाए व सामाजिक एकता की बात रखी।

आचार्यश्री के प्रेरणा से शोभायात्रा में जल-शरबत आदि का निषेध रखा गया जिसका सभी ने पालन करते हुए कड़कती धूप में नंगे पैर चलने का संकल्प लिया। समापन सामूहिक पंचामृत अभिषेक सम्पन्न हुआ। सभी ने चातुर्मास हेतु निवेदन किया। आचार्यश्री ने कहा कि महामस्तकाभिषेक पश्चात् आप सभी के प्रबल पुण्य से टोंक में चातुर्मास हो सकता है।

तीर्थंकर को जन्म देने वाली माता धन्य है

आचार्य संघ के सान्निध्य में नैनवां में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का अभूतपूर्व आयोजन हुआ। भगवान महावीर पंचकल्याणक के अवसर पर यह अद्भुत संयोग रहा कि १९ अप्रैल को भगवान महावीर की जन्म-जयन्ती के अवसर पर ही जन्म कल्याणक का अवसर आया। इस अवसर पर जन्मकल्याणक जुलूस में २५ हाथी, २१ बग्गी, बैंडबाजों के साथ विशाल आचार्य संघ के सान्निध्य में जन्माभिषेक जुलूस निकाला गया। हेलीकाप्टर से पुष्पवर्शा की गई। १००८ कलशों से जन्माभिषेक हुआ।

आचार्यश्री ने कहा कि जगत में जन्म तो सभी माताएँ देती है, लेकिन तीर्थंकर को जन्म देने वाली माता एक ही होती है। भगवान महावीर ने दुनिया को अनेकांत व स्याद्वाद का जो सिद्धान्त समझाया वह अभूतपूर्व है।

केक काटना, मोमबत्ती बुझाना हमारी संस्कृति नहीं

जयपुर के बड़के बालाजी चन्द्रपुरी नगर में भगवान चन्द्रप्रभजी का पंचकल्याणक व आर्यिका सुपार्श्वमति अन्तर्विलय धाम का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। जन्मकल्याणक के अवसर पर आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज ने कहा कि तीर्थंकर बालक के जन्म पर खुशियाँ मनाई जाती है, जगह-जगह दीप जलाकर रोशनी की जाती है। जिससे सबका जीवन रोशन होता है। आजकल माता-पिता बच्चों के जन्मदिन पर केक काटते है, मोमबत्ती बुझाते है जिससे उनका जीवन भी बुझा-बुझा सा रहता है। सभी को प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि सभी संकल्प लें और जन्मदिवस पर देव-शास्त्र-गुरू की पूजन करें, दीपक जलाएँ, मिष्ठान्न खाये, खिलायें लेकिन मोमबत्ती न जलाए, न बुझायें, हमारी संस्कृति को जीवित रखें।

बड़के बालाजी में आर्यिका सुपार्श्वमति माताजी ने समाधि ली थी। यहाँ उनका भव्य समाधि केन्द्र उनकी शिष्या आर्यिका गौरवमति माताजी के निर्देशन में निर्मित हुआ है। अभूतपूर्व आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन सम्मिलित हुए।

केशवराय पाटन में मेला महोत्सव सम्पन्न

आचार्य संघ के सान्निध्य में श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की चमत्कारिक भूमि केशवराय पाटन में दो दिवसीय मेला महोत्सव १ व २ मई को सम्पन्न हुआ, छोटे से नगर में आचार्य संघ के सान्निध्य में अच्छी धर्म प्रभावना हुई। मुनिश्री अपूर्वसागरजी ने कहा कि कुछ हो न हो जीवन में कोई न कोई नियम अवश्य ही धारण करना चाहिये।

सिद्धवरकूट कमेटी ने किया निवेदन

आचार्य संघ के चातुर्मास-२०१६ हेतु श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष प्रदीपकुमारसिंह कासलीवाल व पदाधिकारियों ने केशवरायपाटन में ३ मई को आचार्यश्री से चातुर्मास हेतु निवेदन करते हुए श्रीफल भेंट किया। आचार्यश्री ने कहा कि संघ श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक २०१८ हेतु विहार कर रहा है, जैसे-जैसे नजदीक पहुँचेगें चातुर्मास की घोषणा करेगें। सिद्धक्षेत्र पर चातुर्मास उनकी व संघ की भावना है लेकिन अभी स्पष्ट नहीं किया जा सकता। जैसे-जैसे समीपता होगी घोषणा करेगें। आचार्य संघ कोटा में अल्प प्रवास पश्चात् चाँदखेड़ी, झालरापाटन होते हुए उज्जैन, इन्दौर की ओर विहार करेगा।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर'

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा

श्रीमती सरिता एम.के.जैन, चेन्नई

फरवरी 2018 में होने वाले भगवान गोमटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति का

अध्यक्ष बनने का सम्मान

बुधवार दिनांक 11 मई 2016 को श्रवणबेलगोला में आयोजित एस.डी.जे.एम.आई मैनजमेन्ट कमेटी की बैठक में तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन को फरवरी 2018 में होने वाले भगवान गोमटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति का सर्वानुमति से अध्यक्ष चुना गया जिसकी घोषणा परम पूज्य कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी ने की एवं उन्हें मंगल आशीर्वाद दिये, पश्चात् पद्मविभूषण राजर्षि डॉ. डी. वीरेन्द्र हेगड़े, धर्मस्थल द्वारा श्रीमती सरिता जैन को शाल, श्रीफल एवं माल्यार्पण कर उनका सम्मान किया गया।

संतोष कुमार जैन पेंढारी

महामंत्री

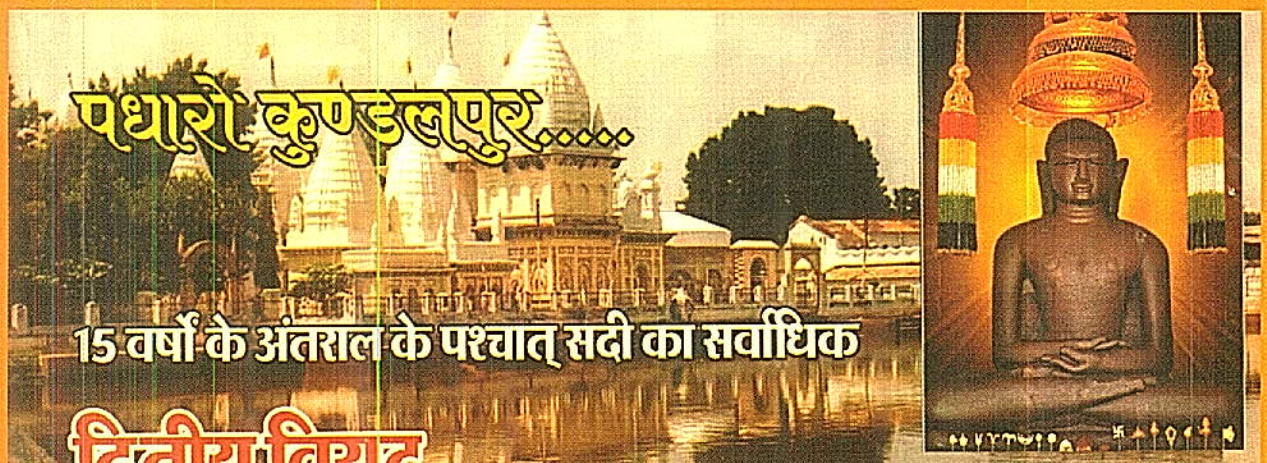

पधारो कुण्डलपुर.....

15 वर्षों के अंतराल के पश्चात् सदी का सर्वाधिक

द्वितीय विराट

महामस्तकाभिषेक महोत्सव

(कुण्डलपुर के बड़े बाबा का कलशों की अविरल धारा से महामस्तकाभिषेक)

सानिध्य - जीव दया के मसीहा दिगम्बराचार्य

श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज (ससंघ)

4 जून 2016 से 9 जून 2016 तक

स्थल : अतिशय सिद्ध क्षेत्र, कुण्डलपुर (दमोह)

आप अपना कलश आरक्षित कर सातिशय पुण्यार्जन करें

- हीरक कलश 11 लाख रू.
- रत्न कलश 5.51 लाख रू.
- अमृत कलश 2.21 लाख रू.
- स्वर्ण कलश 1.11 लाख रू.
- दिव्य कलश 51 हजार रू.
- रजत कलश 21 हजार रू.

अशोक पाटनी	सि. संतोष जैन	वीरेन्द्र बजाज	राकेश सिंघई	संदेश जैन
अध्यक्ष - महोत्सव समिति	अध्यक्ष - सिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर	महामंत्री - सिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर	संयोजक - कलश आवंटन समिति	कार्याध्यक्ष - महोत्सव समिति
	मो.: 94256 11762	मो.: 94250 95548	मो.: 94250 95994	मो.: 98270 13921

आयोजक - श्री बड़े बाबा महास्तकाभिषेक समिति कुण्डलपुर
जिला - दमोह (म.प्र.) एवं सकल जैन समाज जिला - दमोह

Summer
बच्चों गर्मी की छुट्टी में
कहाँ जाना है।
बड़े बाबा का अभिषेक कर
पुण्य कमाना है।

स्थानीय प्रभारी

आवास व्यवस्था हेतु संपर्क सूत्र - मो.: 9406563470, 9300458280, 9827013921 क्षेत्र कार्यालय 07605 - 272230, दमोह कार्यालय 07812 - 225994
मु. पो. कुण्डलपुर, पिन - 470773, तहसील पटेरा, जिला दमोह (म.प्र.)